जल सहेलियों की जल यात्रा

बदलाव की बूँद से जन आंदोलन तक

लेखक- गौरव पाण्डे

अनुक्रमणिका

विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
जल सहेली परिचय	06
संपादक की कलम से	10
शुभकामना संदेश	12
जल सहेलियों की जल यात्रा में महिला नेतृत्व – डॉ इंदिरा खुराना	14
चंदेल कालीन तालाबों के पुनरुद्धार के लिए जुटता समुदाय	16
भूमिका:	18
जल यात्रा तैयारी, संचालन एवं प्रबंधन –	24
जल सहेलियों की जल यात्रा – कार्यक्रम विवरण	28
पहला दिन - रामराजा सरकार के प्रांगण से जल सहेलियों की 300 किमी लंबी जल यात्रा का शुभारंभ	29
दूसरा दिन – जल सहेलियों द्वारा जल यात्रा के दूसरे दिन ग्रामीणों को जल संरक्षण का पाठ	30
तीसरा दिन – जल यात्रा के तीसरे दिन बबीना में संगोष्ठी, अधिकारियों ने जल सहेलियों का बढ़ाया हौसला	31
चौथा दिन - नारी शक्ति के रूप में जल सहेलियाँ	32
पांचवा दिन – घटती जल की उपलब्धता चिंता का विषय – डॉ संजय सिंह	33
छटवां दिन – जल सहेलियों के नाले से नदी बनाने के ज्ञान से ही पुर्नजीवित हो सकती हैं नदियां	34
सातवाँ दिन – संगठन में शक्ति है, जब संगठन संघर्ष करता है तो सफलता निश्चित होती है – नितेंद्र सिंह राठौर	35
आठवां दिन - पग-पग जल सहेलियों की यात्रा, गांव-गांव में जागरूकता	36
नवां दिन – बुंदेलखंड के चंदेला-बुंदेला तालाबों के संरक्षण हेतु बनाया जाए तालाब संरक्षण प्राधिकरण	37
दसवां दिन- अस्तित्व खोते बुंदेलखंड के चंदेल कालीन तालाब, पुनर्जीवन की जरुरत	38
ग्यारहवां दिन – टीकमगढ में स्थापित हो तालाब विश्वविद्यालय, जल संरक्षण की विरासत को मिले नई पहचान	39
बारहवां दिन – जल संरक्षण कोई कार्य नही हमारा कर्तव्य	39
तेरहवां दिन – छोटी नदियों के पुर्नजीवन से ही बचेगी मां गंगा ही अविरल, निर्मल धारा	40
चौदहवां दिन – खेती में जल उपयोग दक्षता को बढाकर करे पानी का संचय	41
पन्द्रहवां दिन – समाज और सरकार की भागीदारी बना सकती बुंदेलखंड को पानीदार	41
सोलहवां दिन – बिजावर के जंगल मध्य प्रदेश की अनोखी पर्यावरण धरोहर	42
सत्रहवां दिन – जल सहेलियों ने जल यात्रा के अनुभव मुख्यमंत्री के साथ किये साझा	43
अट्ठारहवां दिन – केन्द्रीय कृषि मंत्री की उपस्थिति में जल सहेलियों की जल यात्रा का जटाशंकर में होगा समापन	44
अंतिम दिन – जल यात्रा का अंतिम दिन और समापन समारोह - जटाशंकर धाम में	45
यात्रा के दौरान की गयी गतिविधियाँ –	48
नदियों और तालाबों के संरक्षण हेतु प्राधिकरण का गठन –	50
जल संरक्षण और वृक्षारोपण:	52
जल जीवन मिशन का प्रभाव और सुधार:	54
जल सहेलियों को वाटरशेड प्रबंधन एवं कर संग्रहण की जिम्मेदारी	55
सामुदायिक पोषण वाटिका को प्रोत्साहन -	56
कम पानी वाली फसलों को प्रोत्साहित करना:	58
गंदे पानी को नदियों और तालाबों जाने से रोकना:	60
स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली को बढ़ावा	61

जल संरक्षण हेतु वेस्ट वियर निर्माण	61
मृदा संरक्षण	62
अटल भूजल योजना में समुदाय की भागीदारी	62
पशुपालन और लघु वनोपज को बढ़ावा	62
पॉन्ड यूनिवर्सिटी/पॉन्ड विद्यालय की स्थापना:	62
जल सहेली केंद्र की स्थापना:	63
समाज के विभिन्न वर्गों का सहयोग	64
मीडिया का सहयोग	66
तालाबों के पुनर्जीवित करने के लिए कार्ययोजना	68
सफल कहानियाँ	73

जल सहेली

परिचय

आजादी के समय की यह घटना, फिर से बुंदेलखंड में दोहराई जा रही है, लेकिन अब जल संकट को लेकर। अब जल की समस्या को हल करने के लिए महिलाओं ने नेतृत्व किया है। इस संदर्भ में 'जल सहेली' अभियान की शुरुआत की गई है, जो महिलाओं के नेतृत्व में जल संकट से निपटने का एक अभिनव प्रयास है।

बुंदेलखंड की महिलाओं की पहचान मटके सिर पर लिए हुए, पानी की तलाश में मीलों दूर तक जाती हुई थी। यह एक ऐसी जीवनशैली बन चुकी थी, जिसमें महिलाओं का अधिकांश समय केवल पानी जुटाने में ही गुजर जाता था। यदि इस स्थिति को नहीं बदला जाता, तो बुंदेलखंड में खुशहाली की कल्पना करना भी असंभव था।

समाज के इस दर्द को समझते हुए, परमार्थ समाजसेवी संस्थान ने इस सामाजिक तस्वीर को बदलने का बीड़ा उठाया और महिलाओं को इस कष्ट से मुक्ति दिलाने का सपना देखा। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए 'जल सहेली अभियान' की शुरुआत की गई।

बुंदेलखंड की दुर्दशा का सबसे प्रमुख कारण यहाँ का बढ़ता जल संकट है, जो आने वाले समय में और भी भयावह होने की संभावना रखता है। इस क्षेत्र में कई प्रमुख नदियाँ बहती हैं, फिर भी जल संकट का सामना करना पड़ता है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि बुंदेलखंड का क्षेत्र चट्टानों और पठारों पर स्थित है, जिससे जल का संचय करना बेहद कठिन है। इसके अलावा, इस इलाके की जलधारा का मार्ग भी बहुत जटिल है, और प्राकृतिक जल स्रोतों की कमी ने इस संकट को और गहरा किया है।

पिछले 25 वर्षों में, बुंदेलखंड में 13 बार गंभीर सूखा पड़ा है। विशेष रुप से वर्ष 2002 में सूखा शुरु हुआ, जिसके बाद जल संकट निरंतर बढ़ता गया। वर्ष 2005, 2006, 2007 और 2008 सूखे के वर्ष थे, और इस समय के दौरान पानी की भारी किल्लत रही। इन वर्षों में जल के स्रोत सूख गए और खेतों में पानी न होने से फसलें खराब हो गईं, जिससे यहाँ के लोगों की आर्थिक स्थिति भी प्रभावित हुई।

इतिहास की बात करें तो, जब स्वतंत्रता संग्राम का दौर था, तब बुंदेलखंड में महिलाओं की स्थिति बहुत दयनीय थी। उस समय झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई ने महिलाओं की अगुवाई में सेना का गठन किया था और एक पुरुष प्रधान समाज के बावजूद महिलाओं को सामने लाकर स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रुप से भाग लेने का अवसर दिया। यह महिलाओं का संघर्ष और साहस था जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी।

जल सहेली

जल सहेली अभियान का उद्देश्य उन महिलाओं को सामने लाना था, जो जल संरक्षण, संवर्धन और प्रबंधन के क्षेत्र में अपनी भूमिका निभाने के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय थीं। ये महिलाएं अपने गांव को पानीदार बनाने के लिए निस्वार्थ भाव से प्रयासरत थीं। परमार्थ ने इन महिलाओं को केवल जल संरक्षण के महत्व को समझाया ही नहीं, बल्कि उनके आत्मसम्मान और अधिकारों के प्रति भी सजग किया। इन महिलाओं को जल सहेली नाम दिया गया, क्योंकि वे न केवल जल के संरक्षण के लिए सक्रिय थीं, बल्कि वे अपने अधिकारों के प्रति जागरुक भी थीं।

यह सच है कि यह एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण स्थिति थी, जहाँ सामंती सोच और पितृसत्तात्मक समाज की बेड़ियों को तोड़ते हुए महिलाएं धीरे-धीरे समाज में अपनी पहचान बनाने की ओर अग्रसर हो रही थीं। घूंघट में कैद महिलाएं, जिन्हें कभी समाज में अपनी भूमिका तय करने का अधिकार नहीं था, अब सामाजिक वर्जनाओं और रुढ़िवादी मान्यताओं को त्यागकर अपने घरों से बाहर निकलने को तैयार हो रही थीं। शुरुआत में इन महिलाओं को पितृसत्तात्मक और रुढ़िवादी समाज की तमाम कठिनाइयों और यातनाओं का सामना करना पड़ा, लेकिन उनका हौसला और संघर्ष उल्लेखनीय था।

इन महिलाओं ने उन तमाम समस्याओं का सामना किया, जिन्हें हल करना महिलाओं के लिए चुनौती भरा था, और बावजूद इसके उन्होंने अपने कार्यों की एक नई इबारत लिखी। वे महिलाओं, जो कभी घूंघट में कैद रहती थीं, अब आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रही थीं। एक ऐसी सामाजिक तस्वीर बदलने का प्रयास हो रहा था, जो अब तक उनके लिए सिर्फ निराशा का प्रतीक थी।

परमार्थ से जुड़ी इन जल सहेलियों ने दिखाया कि वे सिर्फ जल संकट का समाधान नहीं ढूंढ रही थीं, बल्कि वे अपने समुदाय में बदलाव लाने के लिए भी सक्रिय थीं। वे तालाबों, कुओं और चेकडैमों का निर्माण करतीं, ताकि जल स्रोतों का संरक्षण किया जा सके। इन महिलाओं का संघर्ष, उनका साहस, और उनका समर्पण बुंदेलखंड में जल संकट की समस्या को सुलझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इन जल सहेलियों की प्रेरक कहानियां सचमुच सराहनीय हैं। यह ठीक वैसे है जैसे कोई पत्थर को पारस बना दे – उन्होंने बुंदेलखंड में महिला नेतृत्व को एक नया मोड़ दिया है और इस क्षेत्र की पहचान को भी बदल दिया है।

बुंदेलखंड में जल संकट को ध्यान में रखते हुए परमार्थ ने "पानी पर महिलाओं का पहला हक" अभियान को आगे बढ़ाने का फैसला किया। यह विचार निश्चित रुप से समाज में बदलाव की दिशा में एक अहम कदम था। परमार्थ के स्वयंसेवियों ने उन गांवों की ओर रुख किया, जहां जल संकट सबसे अधिक था, और वहां की महिलाओं से संपर्क किया। इन महिलाओं की स्थिति को समझते हुए, परमार्थ ने एक नई सामाजिक जिम्मेदारी के लिए उन्हें प्रेरित किया।

यह काम न केवल जटिल था, बल्कि बेहद मुश्किल भी था। जल संकट के समाधान के लिए पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं को आगे बढ़ाकर सामाजिक कार्यों के लिए तैयार करना एक कठिन कार्य था। लेकिन परमार्थ के दृढ़निश्चय ने यह सब आसान बना दिया। महिलाओं ने समाजिक और पारिवारिक बंधनों से मुक्ति की ओर कदम बढ़ाए और नए संघर्ष के लिए तैयार हो गईं। जल सहेलियों के अनुभव बताते हैं कि उन्हें इस संघर्ष में कई बार आलोचनाओं और तानों का सामना करना पड़ा। उन्हें डराया गया, बहकाया गया और हतोत्साहित किया गया, लेकिन वे इस संघर्ष में पीछे नहीं हटीं। उनका हौसला और उनकी मेहनत ने साबित कर दिया कि वे अब कभी भी पीछे नहीं हटेंगी और यही हुआ भी।

इन जल सहेलियों ने दिखा दिया कि जब एक महिला ठान लेती है, तो वह किसी भी समाज और परिस्थिति से लड़ सकती है। उन्होंने जल संकट के समाधान के साथ-साथ सामाजिक बदलाव की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए। इनकी संघर्षपूर्ण कहानियां आज भी बुंदेलखंड के लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई हैं।

संपादक की कलम से

जल सहेलियों की यात्रा

एक प्रेरणादायक संघर्ष और समाधान की कहानी

यह कहानी उस अद्वितीय यात्रा की है, जिसने न केवल भारत में, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी जल संकट की गंभीरता को समझने और इसे सुलझाने के लिए कदम उठाने की दिशा में एक नया मोड़ दिया। यह यात्रा जल सहेलियों द्वारा की गई थी, जिन्होंने अपने संघर्ष और समर्पण से समाज में जल संरक्षण के प्रति एक नई चेतना का निर्माण किया।

सभी की नजरें उस यात्रा पर थीं, जो जल सहेलियों ने शुरु की थी। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य जल संकट के बारे में जागरुकता फैलाना और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए समाधान प्रस्तुत करना था। मैंने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि समाज में आज भी त्याग, ईमानदारी और निष्ठा की बहुत कद्र है। जब कोई कार्य ईमानदारी से किया जाता है और उद्देश्य साफ होता है, तो लोग उस प्रयास को समर्थन देते हैं। यात्रा के दौरान यह देखा गया कि जैसे-जैसे लोगों को जल संकट की गंभीरता का अहसास हुआ, वे समाधान के रास्तों की ओर बढ़ने लगे।

यात्रा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव था ओरछा से जटा शंकर धाम की यात्रा। ओरछा न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि पर्यावरणीय दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यहां की ऐतिहासिक और प्राकृतिक धरोहर ने जल संरक्षण के संदेश को और भी प्रभावी बना दिया। ओरछा की यात्रा ने जल संकट के समाधान को एक नई दिशा दी और जल संरक्षण को सिर्फ एक पर्यावरणीय मुद्दा नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण बना दिया।

यात्रा का उद्देश्य सिर्फ जल संकट के बारे में जागरुकता फैलाना नहीं था, बल्कि इसका उद्देश्य यह भी था कि जल संकट के समाधान के लिए स्थानीय और वैश्विक स्तर पर सक्रिय कदम उठाए जाएं। अब जब यात्रा समाप्त हो चुकी है, तो अगले कदमों पर गंभीर विचार करना होगा। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि यह अभियान अस्थायी न हो, बल्कि जल संकट के समाधान के लिए स्थायी और सक्रिय कदम उठाए जाएं।

बुंदेलखंड की मिट्टी, जिसे हमेशा से उपजाऊ नहीं माना जाता, को जल के सही प्रबंधन से फिर से उपजाऊ बनाया जा सकता है। अगर हम जल प्रबंधन में सही कदम उठाएं, तो बुंदेलखंड में हरियाली और खुशहाली लौट सकती है। इससे न केवल पर्यावरण को लाभ होगा, बल्कि स्थानीय समुदायों की आर्थिक स्थिति भी बेहतर होगी।

अंत में, मैंने जनता से अपील की कि वे इस अभियान में सहयोग करें और जल सहेलियों द्वारा किए गए प्रयासों को समर्थन दें। यह अभियान एक सामूहिक प्रयास है। केवल मिलकर काम करने से ही हम जल संकट के समाधान की दिशा में ठोस कदम उठा सकते हैं।

इस अभियान को और अधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए एक पोर्टल और सोशल मीडिया पेज तैयार किया जाएगा, ताकि लोग सक्रिय रुप से इस अभियान से जुड़ सकें और जल संकट के समाधान में अपना योगदान दे सकें। यह अभियान जल संकट को हल करने के लिए एक बड़ा कदम हो सकता है, लेकिन इसके लिए हर किसी का समर्थन और सहयोग जरुरी है। यही एकमात्र तरीका है, जिससे हम अपने देश को जल संकट से बचा सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए पानी की उपलब्धता सुनिश्चित कर सकते हैं।

यह यात्रा न केवल जल संकट को समझने का एक नया दृष्टिकोण देती है, बल्कि यह एक प्रेरणा भी है कि अगर समाज ठान ले, तो कोई भी समस्या हल की जा सकती है। जल सहेलियों का यह अभियान हमें यह सिखाता है कि एकजुट होकर हम न केवल अपने देश, बल्कि पूरी दुनिया में पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं।

डॉ. संजय सिंह

सचिव, परमार्थ समाज सेवी संस्थान

शुभकामना सन्देश

प्रिय जल सहेलियों,

आपकी जल यात्रा पर आधारित पुस्तक का विमोचन एक विशिष्ट उपलब्धि है, जो न केवल जल संरक्षण के प्रति आपकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है, बल्कि समाज में जल के महत्व को समझने और समझाने का एक प्रभावी तरीका भी है। आपकी दूरदर्शिता , कठिन परिश्रम , संघर्ष और समर्पण ने जल के महत्व को हर घर, हर समुदाय तक पहुँचाया है, जो जलवायु परिवर्तन से जुड़े अनुकूलन के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि है । यह पुस्तक न सिर्फ इस अनूठी यात्रा के अनुभवों का संग्रह है, बल्कि यह एक सबके लिए एक प्रेरणा भी है, जो लोंगों के सामूहिक प्रयासों में भरोसा रखते हैं ।आपकी इस यात्रा का यह वृत्तांत आने वाली पीढ़ियों को जल के संरक्षण और विकास के प्रबंधन में अपनी स्वयं की सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करेगी। मेरा विश्वास है कि आपकी यात्रा का यह उल्लेख , जल संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने के आपके प्रयासों को और अधिक सशक्त बनाएगा और जल सहेलियों के रुप में आपके समूह की यह साझी शक्ति निश्चित रुप से समाज में एक परिवर्तनकारी प्रभाव छोड़ेगी। मैं आपको इस पुस्तक के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ , और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक आपके संघर्ष और समर्पण की प्रेरक कहानी को हर एक तक पहुँचाएगी।मैं भविष्य में देश भर में होने वाली इस तरह की संभावित यात्राओं में आप सबकी सफलता और समृद्धि की कामना करता हूँ। जल और जन की समावेशी शक्ति को पहचानकर आपने जो कदम उठाए हैं, वे न केवल समकालीन समाज बल्कि आने वाले समय में भी जल संरक्षण की दिशा में मील का पत्थर साबित होंगे।

शुभकामनाओं सहित,
प्रो. राणा प्रताप सिंह
अध्यक्ष , परमार्थ समाज सेवी संस्थान

जल सहेलियों

की जल यात्रा में महिला नेतृत्व- डॉ इंदिरा खुराना

जल सहेलियों की जल यात्रा का सबसे प्रभावी पहलू नारी शक्ति का योगदान था। इन महिलाओं ने अपनी व्यक्तिगत और पारिवारिक चुनौतियों को पार करते हुए जल संरक्षण की दिशा में अभूतपूर्व प्रयास किए। इन जल सहेलियों ने बिना किसी व्यक्तिगत लाभ की उम्मीद के, केवल समाज और पर्यावरण के भले के लिए कार्य किया। उनका संघर्ष न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक प्रेरणा बन गया।

बुंदेलखंड में हाल ही में जल सहेलियों द्वारा जो जल यात्रा निकाली गई, वह महिला नेतृत्व में एक अनूठे सामाजिक आंदोलन के रूप में उभरी है। सैकड़ों जल सहेलियां अपने-अपने घरों से निकलकर जल संचयन और जल के महत्व को लोगों में जागरूक करने के लिए पद यात्रा कर रही हैं। इन महिलाओं ने यह यात्रा पूरी की, जिसमें हर दिन 15-17 किलोमीटर की दूरी तय की गई। रास्ते में पड़ने वाले गांवों और स्थानों पर उन्होंने जल के महत्व और उसके संरक्षण पर जागरूकता फैलाई।

इस यात्रा का एक अहम पहलू यह था कि जल सहेलियां न केवल लोगों को जल संरक्षण के बारे में जानकारी देती थीं, बल्कि वे तालाबों और नदियों की आरती भी करती थीं। वे इन जल स्रोतों की स्थिति और उनके संरक्षण की आवश्यकता के बारे में समाज से संवाद करती थीं, साथ ही, इन तालाबों और नदियों की दुर्दशा के कारणों पर भी चर्चा करती थीं। इन महिलाओं ने समाधान के लिए सुझाव प्राप्त किए और जल के संरक्षण के प्रति लोगों की मानसिकता को बदलने की कोशिश की।

इसके साथ ही, जल सहेलियां बुंदेलखंड के फसल चक्र का भी निरीक्षण करती थीं, ताकि यह समझ सकें कि किस इलाके में किस प्रकार की फसलें उगाई जा रही हैं और जलवायु परिवर्तन का किस तरह से असर दिख रहा है। इस यात्रा के माध्यम से उन्होंने जलवायु परिवर्तन के कारण जल संकट को बढ़ते हुए देखा और इसके समाधान की दिशा में काम करने के लिए जागरुकता बढ़ाई।

जल सहेलियों की यह यात्रा जल संरक्षण के प्रति जागरुकता फैलाने के साथ-साथ महिला नेतृत्व का भी आदर्श प्रस्तुत करती है। इन महिलाओं ने अपने संघर्षों और समर्पण से यह सिद्ध कर दिया है कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में महिलाएं कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। यह यात्रा न केवल बुंदेलखंड, बल्कि पूरे देश के लिए एक प्रेरणा बन गई है, जो यह संदेश देती है कि जल संरक्षण की दिशा में हर किसी को योगदान देना चाहिए और विशेष रुप से महिला नेतृत्व की भूमिका को स्वीकार करना चाहिए।

जल सहेलियों की जल यात्रा ने यह साबित कर दिया है कि महिला नेतृत्व जल संकट से निपटने के लिए एक प्रभावी और प्रेरणादायक तरीका है। इन महिलाओं के प्रयासों ने जल संरक्षण के प्रति जागरुकता फैलाने और नारी शक्ति की महत्ता को समाज में उजागर किया है। जल सहेलियों का यह आंदोलन जल के संरक्षण के महत्व को समझाता है और समाज के हर स्तर पर इसे फैलाने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

इन महिलाओं ने यह यात्रा पूरी की, जिसमें हर दिन 15-17 किलोमीटर की दूरी तय की गई। रास्ते में पड़ने वाले गांवों और स्थानों पर उन्होंने जल के महत्व और उसके संरक्षण पर जागरुकता फैलाई।

चंदेल कालीन तालाबों

के पुनरुद्धार के लिए जुटता समुदाय

आज के समय में, बुंदेलखंड में 2000 से अधिक चंदेल कालीन तालाबों का अस्तित्व है, लेकिन इनमें से सिर्फ 500 तालाब ही उपयोगी हैं और लोगों की जरूरतों को पूरा कर रहे हैं। ये तालाब मुख्यतः टीकमगढ़, निवाड़ी, छतरपुर और महोबा जिलों में पाए जाते हैं। इन तालाबों की प्रमुख समस्या यह है कि वे सदियों पहले बनाए गए थे और अब उनकी बांध संरचनाएं कमजोर हो गई हैं, जिससे जल संरक्षण के प्रयास प्रभावित हो रहे हैं।

बुंदेलखंड क्षेत्र में चंदेल कालीन तालाबों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस क्षेत्र का जलवायु विशेषत: शुष्क और गर्म है, और यहां पानी की गंभीर कमी का सामना करना पड़ता है। ये तालाब न केवल जल संरक्षण के साधन थे, बल्कि इनका निर्माण चंदेल राजाओं द्वारा 9वीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी के बीच बुंदेलखंड में जल संकट को दूर करने के उद्देश्य से किया गया था। चंदेल राजाओं ने अपनी राजधानी महोबा को बनाया था। उन्होंने 9 हजार से अधिक तालाबों का निर्माण किया, जो आज भी बुंदेलखंड के विभिन्न जिलों में पाए जाते हैं।
इन तालाबों का निर्माण विशेष रूप से उस समय के वास्तुशास्त्र और जल प्रबंधन के सिद्धांतों के अनुसार किया गया था। चंदेल राजाओं ने इन तालाबों को ऐसे स्थानों पर बनाया, जहां जल का संरक्षण हो सके। इन तालाबों के चारों ओर पहाड़, मिट्टी के टीले या प्राकृतिक चट्टानों का सहारा लिया गया, जिससे पानी को तीन दिशाओं से रोका जा सके।

तालाबों का निर्माण जलागम क्षेत्र (वाटरशेड) के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए किया गया था। यह तरीका पानी के संरक्षण के लिए अत्यंत प्रभावी था। चंदेल कालीन तालाबों का उद्देश्य सतही जल को संग्रहित करना और भूजल को रिचार्ज करना था। इन तालाबों का इस्तेमाल न केवल कृषि उद्देश्यों के लिए, बल्कि पीने के पानी के स्रोत के रूप में भी किया जाता था।

समय के साथ, जैसे-जैसे बुंदेलखंड में जनसंख्या बढ़ी और रख-रखाव के साथ-साथ अतिक्रमण होने से, तालाबों की स्थिति खराब होने लगी। पहले जहां लोग इन तालाबों का सही तरीके से उपयोग करते थे, वहीं अब जल संरक्षण के प्रति उदासीनता और मानव लालच के कारण इन तालाबों की स्थिति बिगड़ी। कई तालाबों में गाद और सिल्ट जमा हो गया, जिससे पानी का भंडारण और जल संरक्षण प्रभावित हुआ। इसके अलावा, तालाबों के आसपास की भूमि पर अतिक्रमण होने से तालाबों की जल धारा अवरुद्ध हो गई।

हालाँकि हाल के वर्षों में तालाबों का महत्व समझते हुए इन की स्थिति को सुधारने के लिए जल संरक्षण के क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्य कर रही कई सामाजिक संस्थाएं आगे आयी हैं। इनमें से एक प्रमुख संस्था 'परमार्थ' ने इन तालाबों का गहन अध्ययन किया

बुंदेलखंड के 721 गाँवों का निरीक्षण करने पर पाया कि 688 गाँवों में तालाब, चैकडेम, कच्चे अवरोध बांध, झरने, झीलें और नदियाँ पाई गईं। इन तालाबों में से 241 चंदेली और बुंदेली तालाब थे, जबकि 670 नए तालाब, 401 चैकडेम और 187 कच्चे अवरोध बांध हैं। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि 94 तालाब अतिक्रमित हो गए हैं, जबकि 173 तालाबों को छोटे-मोटे सुधार की आवश्यकता है। 606 तालाबों में प्रमुख सुधार की आवश्यकता है, ताकि ये तालाब जल संरक्षण का कार्य ठीक से कर सकें और लोगों के लिए उपयोगी बन सकें।

'परमार्थ' ने बुंदेलखंड में जल संकट से निपटने के लिए चंदेल कालीन तालाबों के पुनर्जीवन का एक सामुदायिक प्रयास शुरु किया है। संस्था ने स्थानीय ग्रामीण समुदाय, जिसमें आस-पास के किसान, महिलाएं, युवा एवं अन्य ग्रामीण शामिल हैं, को जल संरक्षण के महत्व को समझाने और उनमें जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया है। इन कार्यक्रमों में जल स्रोतों के पुनर्जीवन, वर्षा जल संचयन, पानी की बर्बादी रोकने और सतत खेती जैसे विषयों पर चर्चा की गई। इसके अलावा, संस्था ने स्थानीय समुदायों को जागरुक करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए हैं, ताकि लोग इन तालाबों का सही उपयोग कर सकें और जल संरक्षण के महत्व को समझ सकें। कार्यशालाएं, रैलियां, नुक्कड़ नाटक, और सूचना, शिक्षा एवं संचार सामग्री के माध्यम से जल संरक्षण के प्रति लोगों को प्रोत्साहित किया गया है-

इस संस्था ने इन तालाबों को पुनर्जीवित करने के लिए विभिन्न उपायों पर काम किया है। इनमें तालाबों की सफाई, गाद निकालने, जलाशयों की मरम्मत, जल संचयन के लिए जलागम क्षेत्रों को ठीक करने और तालाबों के आसपास के क्षेत्रों में वृक्षारोपण शामिल हैं। इस प्रयास के तहत, संस्था ने 100 से अधिक चंदेली तालाबों को पुनर्जीवित करने का कार्य किया, जिसमें से एक प्रमुख तालाब 'लहरठाकुरपुरा' गाँव स्थित है, जो झाँसी जिले में है।

इन तालाबों के पुनर्जीवन से न केवल पानी की समस्या हल हो रही है, बल्कि कृषि क्षेत्र में भी सुधार हो रहा है। पानी की उपलब्धता बढ़ने से किसानों को कृषि में राहत मिल रही है और जलस्तर में वृद्धि हो रही है, जिससे भूजल की कमी की समस्या भी कम हो रही है।

चंदेल कालीन तालाब बुंदेलखंड के इतिहास और जल संरक्षण के महत्वपूर्ण प्रतीक हैं। हालांकि समय के साथ इन तालाबों की स्थिति बिगड़ी है, लेकिन संगठनों और सामुदायिक के प्रयासों से इन तालाबों को पुनर्जीवित किया जा रहा है। जन सहयोग, दाता संस्थाओं और कॉर्पोरेट संगठनों के सहयोग से जल संरचनाओं के पुनर्जीवन और जल संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों में पुराने तालाबों, कुंडों, झीलों, और नहरों की सफाई एवं पुनर्निर्माण, जलग्रहण क्षेत्रों का विकास, चेक डैम निर्माण, और वर्षा जल संचयन की तकनीकों को बढ़ावा देना शामिल है। इसके साथ ही, समुदाय को जल संरक्षण की तकनीकों और पारंपरिक जल प्रबंधन विधियों के प्रति जागरुक करने के लिए प्रशिक्षण और कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया है।

परमार्थ जैसी संस्था ने इन कार्यों में तकनीकी विशेषज्ञों, स्थानीय नेतृत्व और ग्रामीण समुदाय को जोड़कर सामूहिक भागीदारी सुनिश्चित की है। इसके अलावा, दाता संस्थाओं और कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत जल संरक्षण परियोजनाओं को लागू कर, ग्रामीण क्षेत्रों में पानी की उपलब्धता बढ़ाने और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के प्रयास भी किए गए हैं।

यदि इन तालाबों का पुनर्निर्माण और रखरखाव ठीक से किया जाए, तो ये तालाब न केवल बुंदेलखंड की जल समस्या को हल कर सकते हैं, बल्कि पूरे भारत में जल संकट से निपटने के लिए एक प्रभावी समाधान बन सकते हैं। यह हमें यह सिखाता है कि जल संरक्षण और जल प्रबंधन के पुराने तरीके आज भी हमारी मदद कर सकते हैं, अगर हम उनका सही तरीके से उपयोग करें।

भूमिका

बुंदेलखंड, जो उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के 14 जिलों में फैला हुआ एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर से परिपूर्ण क्षेत्र है, आज जल संकट के गंभीर संकट से जूझ रहा है। यहाँ के लोग जल के लिए संघर्ष कर रहे हैं, जहाँ नदियाँ सूखने की कगार पर हैं, तालाबों की स्थिति बिगड़ चुकी है और भूजल स्तर निरंतर गिरता जा रहा है। जल संकट ने यहाँ के निवासियों के जीवन को प्रभावित किया है, लेकिन इस संकट के बावजूद कुछ महिलाएँ सामने आईं, जिन्होंने अपने संघर्ष और संकल्प से जल संकट को चुनौती दी और "महिलाओं का जल संरक्षण के प्रति ऐतिहासिक कदम" के रूप में देश में पैदल मार्च के रुप में शुरुआत की। यह पहल 300 किलोमीटर की पैदल यात्रा के रूप में सामने आई, जो न केवल जल संकट की गंभीरता को उजागर करती है, बल्कि जल संरक्षण और जलसंवर्धन के उपायों को जन-जन तक पहुँचाने का एक शानदार तरीका साबित हुई।

देश में ऐसा पहली बार हो रहा था जब महिलाएं जल संरक्षण एवं प्रबंधन के लिए आगे आई और पैदल 300 किलोमीटर निरंतर चलती रही | जल सहेलियों का यह पैदल मार्च समाज के लिए सन्देश था कि महिलाओं की भूमिका केवल घरों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे समाज के महत्वपूर्ण मुद्दों पर भी प्रभाव डाल सकती हैं और बदलाव ला सकती हैं।

यह ऐतिहासिक यात्रा 02 फरवरी 2025 को ओरछा से शुरु हुई और 20 फरवरी 2025 तक चली। इसमें लगभग 150 जल सहेलियाँ और स्थानीय समुदाय के सदस्य शामिल हुए। यात्रा का मार्ग ओरछा से जटाशंकर धाम तक था, जिसमें पाँच जिलों - निवाड़ी, झांसी, ललितपुर, टीकमगढ़, और छतरपुर से होकर यह यात्रा गुजरी। कुल लगभग 300 किलोमीटर की दूरी तय करते हुए, इस यात्रा ने जल संकट के समाधान के लिए जागरुकता फैलाने का कार्य किया और बुंदेलखंड के विभिन्न हिस्सों में जल संरक्षण के महत्व पर बल दिया। यह यात्रा जल संकट के समाधान में महिलाओं की अहम भूमिका और उनके नेतृत्व को एक नया आयाम देने वाली साबित हुई।

इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य बुन्देलखण्ड के जल के लोक विज्ञानं को समझने के साथ-साथ बुंदेलखंड के जल संकट के समाधान के लिए लोगों को जागरुक करना था। यात्रा का एक अन्य प्रमुख उद्देश्य था बुंदेलखंड की चंदेल कालीन तालाबों का जीर्णोद्धार और छोटी नदियों के पुनर्जीवन की आवश्यकता को समाज और प्रशासन के सामने रखना। जल सहेलियों ने इस यात्रा के दौरान जल संरक्षण, जलवर्धन, जल पुनः उपयोग, और वर्षा जल संचयन के विभिन्न उपायों पर चर्चा की और लोगों को इन उपायों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। यात्रा का एक और महत्वपूर्ण उद्देश्य था जल सहेली समूह के कार्यों को बढ़ावा देना और यह दिखाना कि महिलाएँ जल संरक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

इस तरह की यात्रा से विभिन्न स्थानों पर जल-संरक्षण कार्यों को आगे ले जाने के लिए प्रेरणादायक माहौल बना और बहुत से लोगों ने मन बनाया कि वे जल संरक्षण के कार्यों को आगे ले जाएंगे। जहां समय उपलब्ध हुआ, वहां जल-यात्रा के दौरान भी श्रमदान द्वारा जल-स्रोतों को सुधारने या इनकी सफाई करने की कुछ शुरुआत की गई।

हमारे देश के विभिन्न भागों में ऐसी जल-संरक्षण यात्राओं की व अन्य सार्थक कार्यों के लिए की गई यात्राओं की समृद्ध परंपरा रही है। कुछ नदियों के बहाव में आई समस्याओं व उनके प्रदूषण की बेहतर जानकारी प्राप्त करने के लिए महत्त्वपूर्ण व उपयोगी यात्राएं की गई है। हिमालय में परंपरागत बीजों की रक्षा के लिए की गई यात्राएं भी चर्चा में रही है। सुन्दरलाल बहुगुणा ने हिमालय क्षेत्र में सबसे बड़ी पदयात्रा कश्मीर से कोहिमा तक की, जिसके विभिन्न चरणों में अन्य विख्यात सामाजिक कार्यकर्ता भी जुड़े। इस यात्रा में दूर-दूर के गांवों से जो संपर्क हुआ उससे हिमालय क्षेत्र के लिए पर्यावरण रक्षा व टिकाऊ विकास के अनुकूल वैकल्पिक हिमालय विकास नीति तैयार करने में बहुत मदद मिली। मात्र एडवेंचर के लिए की गई यात्राओं के स्थान पर ऐसी जन-सरोकारों से जुड़ी यात्राओं की बेहतर भूमिका है। इस तरह की अधिक यात्राओं व आयोजन विशेषकर युवाओं की उत्साही भागेदारी से होना चाहिए।

भारत डोगरा

-पत्रकार

यह यात्रा जल सहेली समूह द्वारा किए गए कार्यों का विस्तार थी। जल सहेलियाँ, जो कि महिलाएँ होती हैं, अपने-अपने गाँवों में पानी की समस्या से निपटने के लिए हर संभव प्रयास करती हैं। वे जल संचयन, जल संरक्षण, कुओं को गहरा करना, तालाबों का पुनरुद्धार, छोटे बाँध बनाना, हैण्डपंप को सुधारना, और समुदाय को जल प्रबंधन में भागीदारी के लिए प्रेरित करना जैसे कार्य करती हैं। जल सहेलियों की यह पहल न केवल जल संकट को दूर करने का एक कदम है, बल्कि यह समाज में महिलाओं के अधिकारों और उनकी भूमिका को भी प्रोत्साहित करती है। यात्रा की शुरुआत ओरछा से हुई, जो मध्य प्रदेश के एक प्रमुख धार्मिक और ऐतिहासिक स्थल के रुप में प्रसिद्ध है। यहां से यात्रा ने बबीना विकासखंड, ललितपुर जनपद के तालबेहट, टीकमगढ़ के जतारा ब्लॉक तक यात्रा की। यात्रा के दौरान जल सहेलियों और स्थानीय समुदाय ने गाँव-गाँव में जल चौपाल या जल संवाद आयोजित किए। इन जल चौपालों में जल संरक्षण के उपायों पर चर्चा की जाती थी, जैसे वर्षा जल संचयन, जल पुनः उपयोग, और जल की परंपरागत विधियों को बढ़ावा देना। यात्रा के दौरान श्रमदान के रुप में जल स्रोतों की सफाई और सुधार के लिए कई कार्य भी किए गए। यात्रा का समापन जटाशंकर धाम, छतरपुर में हुआ, जो एक प्रमुख धार्मिक स्थल है।

यात्रा के दौरान जल सहेलियों ने कई महत्वपूर्ण जल संरक्षण उपायों पर काम किया। इन उपायों में वर्षा जल संचयन, जल पुनः उपयोग, और पारंपरिक जल स्रोतों का पुनरुद्धार शामिल था। जल सहेलियों ने विभिन्न गांवों में जल चौपालों का आयोजन किया, जहाँ जल संरक्षण के महत्व पर लोगों को जागरुक किया गया। इसके अलावा, उन्होंने स्थानीय जल स्रोतों का चिन्हांकन किया और उन्हें पुनर्जीवित करने के लिए कई प्रयास किए। जल सहेलियों ने यह संदेश दिया कि जल संकट से निपटने के लिए न केवल सरकारी प्रयासों की जरुरत है, बल्कि समाज के प्रत्येक सदस्य को इस समस्या के समाधान के लिए सक्रिय रुप से भाग लेना होगा।
जल सहेलियों की यह यात्रा केवल जल संकट को उजागर करने तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसने समाज में महिलाओं की भूमिका को भी सशक्त किया। जल सहेलियों ने साबित कर दिया कि जल संकट के समाधान में महिलाएँ अहम भूमिका निभा सकती हैं। उनके प्रयासों ने न केवल जल संकट के समाधान की दिशा में योगदान किया, बल्कि उन्होंने यह भी सिद्ध किया कि जब महिलाएँ एकजुट होकर काम करती हैं, तो कोई भी समस्या असंभव नहीं होती। जल सहेलियों की यह यात्रा बुंदेलखंड क्षेत्र में जल संरक्षण और जलवर्धन के उपायों को लोकप्रिय बनाने में सफल रही। यात्रा के दौरान विभिन्न जिलों में जल संरक्षण के प्रति जागरुकता बढ़ी और लोगों ने जल के महत्व को समझा। इस यात्रा के परिणामस्वरुप, कई गाँवों में जल स्रोतों का पुनरुद्धार किया गया, और आने वाले समय में इन जल स्रोतों का पुनः उपयोग किया जाएगा। इसके साथ ही, इस यात्रा ने यह संदेश दिया कि जल संकट से निपटने के लिए हमें सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है, और यह तभी संभव है जब हर व्यक्ति, हर समुदाय और हर सरकार इस दिशा में काम करें।

जल सहेलियों की जल यात्रा एक प्रेरणादायक कहानी है जो हमें बताती है कि जल संकट के समाधान के लिए सामूहिक प्रयास, जागरुकता और जनभागीदारी कितनी महत्वपूर्ण है। इस यात्रा ने बुंदेलखंड के जल संकट को उजागर किया, साथ ही जल संरक्षण और जलवर्धन के उपायों को अपनाने के लिए समाज को प्रेरित किया। यह यात्रा न केवल जल संकट के समाधान की दिशा में एक बड़ा कदम है, बल्कि यह महिलाओं के अधिकारों और उनकी भूमिका को भी सशक्त बनाने का एक प्रयास है। जल सहेलियों की इस यात्रा ने यह सिद्ध किया कि जब महिलाएँ अपनी ताकत और एकजुटता को समझती हैं, तो वे किसी भी समस्या का समाधान कर सकती हैं।

यह यात्रा हमें यह सिखाती है कि जल ही जीवन है, और इसके संरक्षण के लिए हर किसी को जिम्मेदारी से काम करना होगा। अगर हम सभी मिलकर जल संकट के समाधान की दिशा में काम करें, तो हम अपने भविष्य को जलविहीन होने से बचा सकते हैं। "महिलाओं का जल संरक्षण के प्रति ऐतिहासिक कदम" यह हमें यह याद दिलाता है कि जल संकट का समाधान एक सामूहिक प्रयास है, और हम सभी को अपनी जिम्मेदारी समझते हुए इस दिशा में कदम बढ़ाना होगा।

जल सहेलियों की जल यात्रा

जल यात्रा तैयारी, संचालन एवं प्रबंधन

जल सहेलियों की जल यात्रा की तैयारी जल यात्रा के 4 महीने पहले से ही प्रारम्भ कर दी गई थी। इस दौरान जल यात्रा के सफल आयोजन के लिए समय-समय पर विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गईं, ताकि किसी भी परिस्थिति में यात्रा को सुचारु रुप से संचालित किया जा सके।

तैयारियों के अंतर्गत जल सहेलियों और अन्य संबंधित कार्यकर्ताओं को विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया। इसमें यात्रा के दौरान संभावित चुनौतियों से निपटने, सामूहिक नेतृत्व, संवाद कौशल और सामुदायिक भागीदारी को प्रभावी बनाने पर विशेष ध्यान दिया गया। प्रत्येक सदस्य को उसकी जिम्मेदारियों से अवगत कराया गया, जिससे यात्रा के दौरान किसी भी असमंजस की स्थिति से बचा जा सके।

जल यात्रा की योजना बनाते समय मार्ग, ठहराव, आवश्यक संसाधनों और समन्वय की विस्तृत रुपरेखा तैयार की गई। जल सहेलियों ने स्वयं इस प्रक्रिया में भाग लेकर अपने अनुभवों को साझा किया और रणनीतियाँ बनाईं, ताकि सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए एक संगठित यात्रा सुनिश्चित की जा सके। विभिन्न समूहों को अलग-अलग कार्य सौंपे गए, जिससे संचालन और प्रबंधन में किसी भी प्रकार की रुकावट न आए।

संचालन की दृष्टि से जल सहेलियों के दल बनाए गए, जिनकी जिम्मेदारी थी कि वे यात्रा के हर चरण में मार्गदर्शन और आवश्यक सहयोग प्रदान करें। प्रत्येक दल को मार्गदर्शन के लिए अनुभवी सदस्यों के साथ जोडा गया, जिससे निर्णय लेने की प्रक्रिया को सुचारु रुप से चलाया जा सके। यात्रा मार्ग में जिन समुदायों से संवाद किया जाना था, उनकी पृष्ठभूमि को समझकर वार्तालाप की रुपरेखा भी तय की गई।

प्रबंधन के अंतर्गत भोजन, आवास, परिवहन और अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित किया गया। यात्रा के दौरान किसी भी आकस्मिक परिस्थिति से निपटने के लिए आपातकालीन संपर्क सूत्र तैयार किए गए, जिससे संचार में किसी भी प्रकार की बाधा न उत्पन्न हो। जल सहेलियों और कार्यकर्ताओं को यह जिम्मेदारी दी गई कि वे यात्रा के हर पडाव पर संसाधनों की उपलब्धता और आवश्यक व्यवस्थाओं की निगरानी करें। यात्रा की तैयारी से लेकर संचालन एवं प्रबंधन में मुख्य रुप से निम्न प्रमुख बिंदु रहेः-

जल सहेलियों के सम्मेलन -

जल यात्रा की सफलता सुनिश्चित करने के लिए यात्रा से पूर्व जिला स्तर पर जल सहेलियों के सम्मेलनों का आयोजन किया गया। इन सम्मेलनों का मुख्य उद्देश्य जल सहेलियों को एक मंच प्रदान करना था, जहां वे अपने क्षेत्रों की जल समस्याओं को साझा कर सकें और यात्रा के दौरान उठाए जाने वाले मुद्दों पर सामूहिक निर्णय ले सकें।

प्रत्येक जिले की जल सहेलियों ने अपने-अपने गांवों की जल संबंधी चुनौतियों पर चर्चा की और यह तय किया कि यात्रा के दौरान किन प्राथमिकताओं पर काम किया जाएगा। इसके साथ ही, जल यात्रा के मार्ग, प्रमुख पडावों और आवश्यक व्यवस्थाओं की रुपरेखा भी तैयार की गई। इन सम्मेलनों में यह सुनिश्चित किया गया कि प्रत्येक क्षेत्र में यात्रा का नेतृत्व करने वाली प्रमुख जल सहेली की जिम्मेदारी स्पष्ट हो, ताकि पूरी यात्रा का संचालन सुचारु रुप से हो सके।

सम्मेलन में इस बात पर विशेष जोर दिया गया कि जल यात्रा केवल एक प्रतीकात्मक अभियान न रहकर एक सशक्त जनांदोलन बने, जिससे स्थानीय समुदायों में जल संरक्षण की जागरुकता को बढावा मिले और वे अपने जल स्रोतों के संरक्षण व पुनर्जीवन के लिए ठोस कदम उठाएं। इसके लिए गांव स्तर पर जल सहेलियों ने यात्राओं की तैयारियां शुरु कीं, समुदायों को जोडा और सुनिश्चित किया कि यात्रा के दौरान जल संकटग्रस्त क्षेत्रों की वास्तविकता उजागर हो सके।

यात्रा में चलने वाले जल यात्रियों का चयन -

जल सहेलियों की जल यात्रा के सफल संचालन के लिए यात्रा में शामिल होने वाले जल यात्रियों का चयन अत्यंत सावधानीपूर्वक किया गया। चयन प्रक्रिया में यह सुनिश्चित किया गया कि यात्रा के दौरान किसी भी सहभागी को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना न करना पडे। इसके लिए स्वस्थ और सक्षम जल सहेलियों को प्राथमिकता दी गई, ताकि वे यात्रा की पूरी अवधि में सक्रिय रुप से योगदान दे सकें।

साथ ही, चयन प्रक्रिया में इस बात का भी ध्यान रखा गया कि जिन जल सहेलियों की घरेलू जिम्मेदारियाँ अत्यधिक हों, वह अपनी स्वेच्छा से एक-दो दिन यात्रा में जुड सके। जिससे उनके परिवार पर कार्यात्मक बोझ न पडे।

इसके अलावा, उन जल सहेलियों को भी यात्रा से जोडा गया जो प्रत्यक्ष रुप से यात्रा में शामिल नहीं हो सकीं। यात्रा मार्ग के आसपास के गाँवों में इन जल सहेलियों को जागरुकता अभियान और प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी सौंपी गई, ताकि जल यात्रा का संदेश व्यापक स्तर पर पहुंचे और अधिक से अधिक लोग इस मुहिम से जुड सकें।

भोजन प्रबंधन -

जल सहेलियों की जल यात्रा के दौरान भोजन प्रबंधन की जिम्मेदारी कार्यकर्ताओं द्वारा पूरी सतर्कता और समर्पण के साथ संभाली गई। इस उद्देश्य के लिए एक विशेष टीम का गठन किया गया, जो पूरी यात्रा के दौरान भोजन की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए सतत कार्यरत रही।

प्रत्येक दिन यात्रा आरंभ होने से पहले सभी जल यात्रियों को चाय और हल्के नाश्ते की सुविधा दी जाती थी, जिससे वे दिनभर की यात्रा के लिए ऊर्जावान बने रहें। दोपहर के भोजन के लिए पहले से ही एक उपयुक्त स्थान का चयन किया जाता था, जहां जल यात्री आराम से बैठकर भोजन कर सकें। यह स्थान जल उपलब्धता और छायादार क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए तय किया जाता था। वहीं, शाम के समय उस स्थान पर भोजन उपलब्ध कराया जाता था, जहां यात्रियों का रात्रि विश्राम होता था।

यात्रा के दौरान भोजन की गुणवत्ता और संतुलन का विशेष ध्यान रखा गया। पर्याप्त मात्रा में अनाज, दाल, सब्जियाँ, और आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर आहार उपलब्ध कराया गया, जिससे जल यात्री स्वस्थ और ऊर्जावान बने रहें। भोजन निर्माण और वितरण में भी स्वच्छता बनाए रखा गया। समुदाय का भी इस व्यवस्था में विशेष योगदान रहा। विभिन्न गाँवों में स्थानीय लोगों ने भी जल यात्रियों के भोजन के लिए सहयोग प्रदान किया, इस सामूहिक प्रयास से यात्रा के दौरान किसी भी यात्री को भोजन की कोई असुविधा नहीं हुई।

प्रवास प्रबंधन -

जल सहेलियों की जल यात्रा को सुनियोजित और व्यवस्थित रूप से संपन्न करने के लिए प्रवास प्रबंधन को एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता दी गई। यात्रा की सुचारु रूप से संचालन के लिए जल सहेलियों एवं कार्यकर्ताओं की एक विशेष टीम गठित की गई, जिसने यात्रा से दो महीने पूर्व ही प्रवास स्थलों के चयन की प्रक्रिया प्रारंभ कर दिया था। चयन प्रक्रिया के लिए एक टीम द्वारा उन स्थानों का निरीक्षण किया गया, जहाँ जल सहेलियों का प्रवास होना था। ज्यादातर प्रवस के स्थानों के लिए स्कूल का चयन किया गया, जिनमें सुरक्षा, स्वच्छता और जल आपूर्ति की स्थिति अच्छी हो। इसके बाद, एक दूसरी टीम को जिम्मेदारी दी गई कि वह इन चयनित स्थलों का दोबारा मूल्यांकन करें ताकि किसी भी प्रकार की कमी न रहे और यात्रा के दौरान किसी कठिनाई का सामना न करना पडे।

यात्रा के दौरान, प्रवास टीम यात्रा से आगे बढकर हर पडाव पर प्रवास व्यवस्थाओं की पुष्टि करती थी। यह टीम सुनिश्चित करती थी कि जल सहेलियों और अन्य प्रतिभागियों के लिए आवास, भोजन, जल आपूर्ति, शौचालय और आवश्यक सुविधाएँ सुचारु रूप से उपलब्ध हों। विशेष रूप से रात्रि प्रवास की सुरक्षा व्यवस्था पर गहन ध्यान दिया जाता था ताकि सभी प्रतिभागी निश्चिंत होकर यात्रा में योगदान दे सकें।

चिकित्सा व्यवस्था -

जल सहेली यात्रा के दौरान स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए एक विशेष चिकित्सा दल का गठन किया गया। इस दल का मुख्य कार्य यात्रा के दौरान किसी भी चिकित्सकीय आवश्यकता को पूरा करना तथा सभी यात्रियों के स्वास्थ्य की देखभाल करना था। यात्रा के दौरान किसी भी आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए एक अलग से वाहन की व्यवस्था की गई थी, जिससे किसी भी आपात स्थिति में तत्काल चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराई जा सके।

यात्रा के मार्ग में आने वाले प्रत्येक जिले को पहले से सूचित किया गया था, जिससे स्वास्थ्य विभाग की स्थानीय टीमों को इस यात्रा के बारे में जानकारी मिल सके। स्वास्थ्य विभाग द्वारा विभिन्न स्थानों पर अपनी टीम को यात्रा के साथ जोडा गया, जिससे समय-समय पर यात्रियों के स्वास्थ्य की जांच की जा सके। इस पूरी व्यवस्था का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि जल सहेलियों की जल यात्रा में शामिल सभी जल यात्री स्वस्थ रहें और यात्रा बिना किसी बाधा के पूरी हो।

प्रत्येक पडाव पर यात्रियों के लिए प्राथमिक चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई गई थी। इसके अलावा, स्वास्थ्य दल ने भोजन और पानी की गुणवत्ता की भी निगरानी की, ताकि किसी भी प्रकार की स्वास्थ्य समस्या उत्पन्न न हो।

यात्रा के दौरान विभिन्न चिकित्सा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए

- प्रत्येक जलयात्रा दल के साथ प्राथमिक चिकित्सा किट उपलब्ध कराई गई।
- आकस्मिक चिकित्सा आवश्यकताओं के लिए एक विशेष वाहन को जलयात्रा के साथ रखा गया।
- यात्रा मार्ग में पडने वाले अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों को पहले से सूचित किया गया, जिससे आवश्यकतानुसार तत्काल चिकित्सा सहायता मिल सके।
- जलयात्रियों की नियमित स्वास्थ्य जांच की गई और आवश्यक दवाएं उपलब्ध कराई गईं।

जल सहेलियों की जल यात्रा

02 फरवरी से 19 फरवरी 2025

कार्यक्रम विवरण

क्र.	दिनांक	जिला	ब्लॉक	स्थान	कार्यक्रम
1	02.Feb.25	निवाड़ी	निवाड़ी	कंचना घाट	यात्रा शुभारम्भ कार्यक्रम
2	02.Feb.25	निवाड़ी	निवाड़ी	वागन तिगेला	स्वागत कार्यक्रम
3	03.Feb.25	निवाड़ी	निवाड़ी	घुरारी नदी	घुरारी नदी आरती, मानव श्रंखला
4	03.Feb.25	निवाड़ी	निवाड़ी	पठारी तिगैला	स्वागत गोष्ठी
5	03.Feb.25	झाँसी	बबीना	गणेशपुरा चौराहा	स्वागत एवं गोष्ठी
6	04.Feb.25	झाँसी	बबीना	बबीना पुराना थाना	स्वागत एवं जल चौपाल
7	04.Feb.25	झाँसी	बबीना	घिसौली	स्वागत
8	05.Feb.25	ललितपुर	तालबेहट	झरर घाट	स्वागत
9	05.Feb.25	ललितपुर	तालबेहट	ग्राम पंचायत कड़ेसरा कलां	जल चौपाल
10	06.Feb.25	ललितपुर	तालबेहट	तालबेहट	गोष्ठी
11	06.Feb.25	ललितपुर	तालबेहट	ग्राम पंचायत सुनौरी	गोष्ठी
12	07.Feb.25	ललितपुर	तालबेहट	बरुआ नदी	बरुआ नदी आरती, मानव श्रंखला, गोष्ठी
13	07.Feb.25	ललितपुर	तालबेहट	ग्राम पंचायत पूराकलां	पूराकला तालाब पूजन, गोष्ठी
14	07.Feb.25	टीकमगढ़	जतारा	जामनी नदी	जामनी नदी आरती, स्वागत
15	08.Feb.25	टीकमगढ़	जतारा	मोहनगढ़	यात्रा का स्वागत, गोष्ठी
16	09.Feb.25	टीकमगढ़	जतारा	नन्दनपुरा तिगैला	यात्रा स्वागत एवं जल चौपाल
17	10.Feb.25	टीकमगढ़	टीकमगढ़	पुरानी टेहरी, टीकमगढ़	रात्रि चौपाल
18	11.Feb.25	टीकमगढ़	टीकमगढ़	माडूमल	यात्रा स्वागत गोष्ठी
19	12.Feb.25	टीकमगढ़	टीकमगढ़	बड़गांव हाई सेकेंडरी स्कूल	रात्रि चौपाल
20	13.Feb.25	छतरपुर	बडामलहरा	धसान नदी	धसान नदी आरती
21	14.Feb.25	छतरपुर	बडामलहरा	घुवारा	स्वागत, जल सभा
22	15.Feb.25	छतरपुर	बडामलहरा	दो खम्बा	स्वागत
23	16.Feb.25	छतरपुर	बडामलहरा	महाराजगंज	जल सभा
24	17.Feb.25	छतरपुर	बिजावर	नयाताल	स्वागत, गोष्ठी
25	18.Feb.25	छतरपुर	बिजावर	बिजावर	स्वागत, जल सभा
26	19.Feb.25	छतरपुर	बिजावर	जटाशंकर	यात्रा समापन

पहला दिन

रामराजा सरकार के प्रांगण से जल सहेलियों की 300 किमी लंबी जल यात्रा का शुभारंभ

19 दिनों तक की जल सहेलियों की जल यात्रा का हुआ आरंभ

ओरछा, निवाड़ी: रविवार 02 फ़रवरी को रामराजा सरकार के पावन स्थल बेतवा नदी के कंचना घाट से जल सहेलियों की 300 किमी लंबी जल यात्रा का भव्य शुभारंभ हुआ। इस यात्रा का उद्देश्य बुंदेलखंड में जल संरक्षण, भूजल पुनर्भरण और समुदाय को जल संकट के प्रति जागरूक करना है। निवाड़ी जिले के जिलाधिकारी लोकेश जांगिड़ ने हरी झंडी दिखाकर इस यात्रा को रवाना किया और जल सहेलियों को सफलता की शुभकामनाएं दीं।

जल संरक्षण आंदोलन के प्रख्यात कार्यकर्ता जल पुरुष डॉ. राजेंद्र सिंह ने इस अवसर पर कहा, "आज हमारी जल सहेलियां रामराजा सरकार के पावन प्रांगण से निकल रही हैं। वे 300 किलोमीटर की यात्रा के दौरान गांव-गांव जाकर बच्चों और बुज़ुर्गों को यह समझाएंगी कि यदि हम पानीदार रहेंगे, तो इज्जतदार होंगे, और यदि पानीदार होंगे, तो मालदार रहेंगे।" उन्होंने राजस्थान के जल संकट का उदाहरण देते हुए बताया कि वहां पहले पानी की कमी के कारण लोग अपने गांवों को छोड़कर चले गए थे, लेकिन जल संरक्षण के प्रयासों से अब गांव के युवा वापस लौटने लगे हैं।

जल संसाधन स्थायी समिति के सदस्य एवं जालौन-गरौठा-भोगनीपुर के सांसद नारायण दास अहिरवार ने इस अवसर पर कहा, "बुंदेलखंड में जल संकट गंभीर रूप ले चुका है। पहले यहां की नदियां बारहमासी होती थीं, झरने गिरते थे, लेकिन अब अधिकांश जल स्रोत सूख चुके हैं। किसान वर्षा और नहरों पर निर्भर हैं, लेकिन अनियमित बारिश के कारण कृषि क्षेत्र प्रभावित हो रहा है। इन सभी चुनौतियों के बावजूद नीली साड़ी पहने जल सहेलियां बुंदेलखंड को पानीदार बनाने के मिशन में जुटी हुई हैं।"

परमार्थ समाज सेवी संस्थान के सचिव डॉ. संजय सिंह ने इस ऐतिहासिक क्षण पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि जल सहेलियों की यह 18 दिवसीय यात्रा ओरछा के कंचना घाट से शुरु होकर छतरपुर के जटाशंकर धाम में संपन्न होगी। इस यात्रा के दौरान जल सहेलियां गांव-गांव जाकर जल संरक्षण का संदेश देंगी और लोगों को जल प्रबंधन के महत्व के बारे में समझाएंगी।

हिमालयन बेसिन रिवर की अध्यक्ष डॉ. इंदिरा खुराना ने जल सहेलियों के प्रयासों की सराहना की और पहली जल सहेली सिरकुंवर के कार्य की विशेष रूप से प्रशंसा की। उन्होंने जल सहेलियों का हौसला बढ़ाते हुए कहा, "इन महिलाओं का काम अत्यधिक प्रेरणादायक है। वे समाज में जल संकट के प्रति जागरुकता फैलाने के साथ-साथ जल संरक्षण के प्रति समर्पण से कार्य कर रही हैं।"
नाबार्ड के जनरल मैनेजर कमर जावेद ने कहा कि इस यात्रा के माध्यम से जल सहेलियां गांव-गांव में भूजल के महत्व को उजागर करेंगी और जल संरक्षण एवं प्रबंधन की जानकारी प्रदान करेंगी, जिससे यह यात्रा बुंदेलखंड के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगी।

वाटर फॉर पीपल्स के निदेशक विश्वदीप घोष ने जल सहेलियों की सराहना करते हुए कहा, "जल सहेलियां न केवल पानी के महत्व को समझा रही हैं, बल्कि जल प्रबंधन की आधुनिक तकनीकों को भी गांव-गांव तक पहुंचाने का कार्य कर रही हैं। मैं आशा करता हूं कि यह यात्रा जल संरक्षण को एक मजबूत आंदोलन में बदलने में मदद करेगी।" उद्घाटन समारोह में 1500 से अधिक जल सहेलियों ने हिस्सा लिया |

दूसरा दिन

जल सहेलियों द्वारा जल यात्रा के दूसरे दिन ग्रामीणों को जल संरक्षण का पाठ

जल सहेलियों की यात्रा का स्वागत, 10 लाख लोगों तक जल संरक्षण का संदेश देने का उद्देश्य

ओरछा, निवाड़ी: बुंदेलखंड में जल संकट को दूर करने के उद्देश्य से जल सहेलियों द्वारा निकाली जा रही जल यात्रा के दूसरे दिन का कार्यक्रम काफी उत्साहपूर्ण रहा। जल सहेलियां, जो 19 दिनों तक 300 किमी की यात्रा पर निकली हैं, ने आज लाडपुरा, मडोर, रजपुरा, पठारी, चकरपुर, गणेशगढ़ चौराहा, मानपुर, जनौली, लहर ठाकुरपुर, और ठाकुरपूरा गांवों में जल संरक्षण का संदेश दिया और ग्रामीणों को जल के महत्व के बारे में जागरुक किया।

यात्रा के दौरान हर गांव में जल सहेलियों का भव्य स्वागत किया गया। जगह-जगह ग्रामीणों द्वारा पुष्प वर्षा कर जल सहेलियों का अभिनंदन किया गया।

जल सहेली सीमा ने यात्रा के दौरान कहा, "हम सभी जल सहेलियां ओरछा से जटाशंकर धाम तक आप सभी को जल के बारे में जागरुक करने के लिए निकली हैं। जल संरक्षण केवल वर्तमान समय की आवश्यकता नहीं है, बल्कि मानव जाति के अस्तित्व के लिए भी जरुरी है। अगर हम ने गांव-गांव में अब जल संरक्षण की दिशा में कदम नहीं उठाए, तो वह दिन दूर नहीं जब पीने के लिए भी पानी उपलब्ध नहीं होगा।" उनके इस संदेश ने ग्रामीणों में जल संरक्षण के प्रति जागरुकता बढ़ाई और उन्हें इस विषय पर गंभीर सोचने पर मजबूर किया।

परमार्थ समाज सेवी संस्थान के सचिव डॉ. संजय सिंह ने यात्रा के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा, "हमारा लक्ष्य सिर्फ बुंदेलखंड में जल सहेली को जल संरक्षण का कार्य करने के लिए प्रेरित करना नहीं है, बल्कि पूरे देश में जल संरक्षण के महत्व को समझाना है। जल सहेलियों की यह यात्रा पांच जिलों में जाएगी और 10 लाख से अधिक लोगों को जल संरक्षण के बारे में जागरुक करेगी। हम चाहते हैं कि जल की महत्ता हर नागरिक को समझ में आए, ताकि जल संकट को लेकर जागरुकता पैदा हो सके।"

इस यात्रा के दौरान कई प्रमुख स्थानीय नेताओं और पंचायत प्रतिनिधियों का भी जल सहेलियों द्वारा जोरदार स्वागत किया गया।
इस यात्रा के दौरान जल सहेलियों ने हजारों लोगों तक जल संरक्षण का संदेश पहुंचाया। जल सहेलियों का यह प्रयास सिर्फ बुंदेलखंड के जल संकट को दूर करने का नहीं, बल्कि पूरे देश में जल के महत्व को समझने और जल प्रबंधन के उचित तरीकों को अपनाने का एक बड़ा कदम है। गांव-गांव में जल सहेलियों ने जल संरक्षण, भूजल पुनर्भरण, और जल प्रबंधन के महत्व पर चर्चा की और यह बताया कि किस तरह से जल संकट के समाधान के लिए समुदाय को एकजुट होने की आवश्यकता है।

तीसरा दिन

जल यात्रा के तीसरे दिन बबीना में संगोष्ठी, अधिकारियों ने जल सहेलियों का बढ़ाया हौसला

जल सहेलियों ने बबीना में जल संरक्षण के महत्व पर किया जोर, अधिकारियों और ग्रामीणों ने दिया समर्थन

झांसी: बुंदेलखंड क्षेत्र में जल संकट से निपटने और जल संरक्षण के प्रति जन जागरुकता फैलाने के लिए जल सहेलियों द्वारा निकाली जा रही जल यात्रा ने तीसरे दिन बबीना में अपना पड़ाव डाला। यह यात्रा, जो परमार्थ समाज सेवी संस्थान के संस्थापक डॉ. संजय सिंह के नेतृत्व में चल रही है, का उद्देश्य जल के महत्व को समझाना और जल संकट से निपटने के लिए सामूहिक प्रयासों को प्रोत्साहित करना है। जल सहेलियों का यह अभियान न केवल बुंदेलखंड बल्कि पूरे देश में जल संकट के समाधान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो रहा है।

यात्रा की शुरुआत बबीना स्थित रसोई से हुई, जहां जल सहेलियों ने जल प्रबंधन और पानी की बचत के महत्व पर चर्चा की। रसोई में हुए इस संवाद के दौरान जल सहेलियों ने बताया कि पानी की बचत न केवल दैनिक जीवन के लिए आवश्यक है, बल्कि यह हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी जरुरी है। इसके बाद यात्रा ने बबीना के ऐतिहासिक तालाब की ओर रुख किया, जहां जल सहेलियों ने जल संरक्षण का संकल्प लिया और ग्रामीणों को तालाबों और जलस्रोतों के पुनर्जीवन की आवश्यकता के बारे में अवगत कराया। जल सहेलियों ने बताया कि जल संकट को सुलझाने के लिए सामूहिक प्रयास और हर एक नागरिक की भागीदारी जरुरी है।

यात्रा के दौरान बबीना नगर में प्रवेश करने पर ब्लॉक सभागार में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्रीय अधिकारी और समाजसेवी भी उपस्थित रहे।

संगोष्ठी के बाद, जल यात्रा ने झांसी-ललितपुर राजमार्ग से होते हुए घिसौली और फिर बड़ौरा में ठहराव लिया। रास्ते में जल सहेलियों का जोरदार स्वागत किया गया, जहां सैकड़ों ग्रामीणों ने उन्हें पुष्प वर्षा से सम्मानित किया। ग्रामीणों ने जल सहेलियों के जल संरक्षण के प्रयासों में समर्थन देने का वचन लिया और जल बचाने के लिए प्रतिबद्धता जताई।

यात्रा के समापन पर जल पुरुष के नाम से प्रसिद्ध डॉ. राजेंद्र सिंह ने जल सहेलियों को संबोधित किया। उन्होंने कहा, "जल सहेलियां बुंदेलखंड में जल क्रांति की वाहक बन रही हैं। उनका यह प्रयास क्षेत्र में जल संकट से निपटने में ऐतिहासिक भूमिका निभाएगा।" उन्होंने जल संचयन और वर्षा जल संरक्षण के महत्व पर जोर देते हुए जल सहेलियों को अपने अभियान को और सशक्त बनाने के लिए प्रेरित किया। यह जल यात्रा अब अन्य गांवों की ओर बढ़ेगी और जल सहेलियों का अभियान पूरे बुंदेलखंड क्षेत्र में जल संरक्षण और नदी-तालाबों के पुनर्जीवन के संदेश को फैलाएगा। जल सहेलियों का यह आंदोलन बुंदेलखंड में जल संकट को दूर करने के लिए एक नई राह खोल रहा है। यह अभियान आने वाली पीढ़ियों के लिए जल की उपलब्धता और स्वच्छता को सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल साबित होगा।

चौथा दिन — नारी शक्ति के रूप में जल सहेलियाँ

झरर में बेतवा नदी के घाट पर हुआ पूजा-अर्चना

जल संरक्षण और जागरुकता का संदेश लेकर जल सहेलियों की जल यात्रा चौथे दिन बबीना विकासखंड के बड़ौरा गांव से आगे बढ़ी। यात्रा तालबेहट विकासखंड के झरर घाट से होते हुए ऐतिहासिक चंदेली तालाब, कड़ेसरा कला तक पहुंची। तालाब किनारे संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें प्रशासनिक अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति रही।

अपर जिलाधिकारी श्रीवास्तव ने जल सहेलियों की इस यात्रा को ऐतिहासिक बताते हुए उनकी भूमिका की सराहना की। उन्होंने कहा कि जल जीवन मिशन के तहत जल सहेलियाँ हर घर नल योजना के अंतर्गत गांव-गांव में टोंटी लगवाने के कार्य में जुटी हैं और जल चौपालों के माध्यम से जल संरक्षण और इसके महत्व को लेकर जागरुकता फैला रही हैं।

जल सहेली फाउंडेशन के संस्थापक संजय सिंह ने जल सहेलियों के इस अनूठे प्रयास की प्रशंसा करते हुए स्थानीय समुदाय को आश्वस्त किया कि तालबेहट के चंदेली तालाब का सौंदर्यीकरण जिला प्रशासन के सहयोग से कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि यह बुंदेलखंड का पहला तालाब है, जिसके नाम पर तालबेहट शहर का नाम पड़ा।

इसके बाद यात्रा तालबेहट नगर में प्रवेश कर गई, जहां स्थानीय जनप्रतिनिधियों और नागरिकों ने भव्य स्वागत किया। हर पड़ाव पर जल सहेलियाँ हर घर नल योजना के तहत टोंटी लगाने के लिए प्रेरित करती रहीं। वे जल संरक्षण, स्वच्छ जल की महत्ता और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए जन संवाद और जागरुकता अभियान चला रही हैं।

> **हम जल सहेली हैं, और हमारा काम सिर्फ पानी बचाने का नहीं, बल्कि लोगों को यह समझाने का भी है कि पानी बचाना हमारी ज़िम्मेदारी है, हमारी पहचान है।**
>
> **– जल सहेली, मंजू**

पांचवा दिन — घटती जल की उपलब्धता चिंता का विषय – डॉ संजय सिंह

सहेलियों की जल यात्रा के पाँचवें दिन तालबेहट के मर्दन सिंह इंटर कॉलेज में जल चैपाल का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जल सहेली फाउंडेशन के संस्थापक और बुंदेलखंड में 'जन पुरुष' के नाम से प्रसिद्ध डॉ. संजय सिंह ने जल चैपाल को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि पानी जीवन का एक महत्वपूर्ण घटक है, और इसकी कीमत को समझना अत्यंत आवश्यक है। प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता लगातार घट रही है, जो भविष्य में हमारे लिए चिंता का विषय बन सकती है। आज जब जल यात्रा तालबेहट से सुनौरी और हिंगौरा पुराकलां रोड पर निकली, तो राजकीय इंटर कॉलेज की बालिकाओं, आवासीय आश्रम पद्धति विद्यालय के विद्यार्थियों और मर्दन सिंह इंटर कॉलेज के विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में जल सहेलियों का स्वागत किया। इसके बाद यात्रा आगे बढ़ी और सुनौरी गाँव में एक सभा आयोजित की गई, जिसमें कई गाँवों के ग्राम प्रधान, जिला पंचायत सदस्य और स्थानीय लोग बड़ी संख्या में शामिल हुए।

भारत की जनसंख्या विश्व की 28 प्रतिशत आबादी के बराबर है, जबकि हमारे पास विश्व के मात्र 4 प्रतिशत जल संसाधन उपलब्ध हैं। भारत दुनिया में सबसे अधिक भूजल दोहित करने वाला देश है, और जनसंख्या के दृष्टिकोण से भी हम दुनिया के सबसे बड़े देश हैं। इस कारण पानी की खपत बहुत अधिक है। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के चलते पानी की आवश्यकता और अधिक बढ़ रही है, दूसरी ओर जल की गुणवत्ता भी निरंतर खराब हो रही है। बढ़ते तापमान के कारण खेती में पानी का उपयोग भी बढ़ रहा है।

ऐसे चुनौतीपूर्ण समय में हमें जल संरक्षण को प्राथमिकता देनी होगी। वर्तमान में हो रही वर्षा का 80 प्रतिशत पानी बहकर निकल जाता है, और कुछ क्षेत्रों में तो यह आंकड़ा 95 प्रतिशत तक पहुँच जाता है। आज़ादी के इतने वर्षों बाद भी हम वर्षा जल संचयन, जल रोकथाम और जल संरक्षण के प्रयासों में अपेक्षित सफलता नहीं पा सके हैं। मोटे अनुमान के अनुसार, यदि 1 सेंटीमीटर वर्षा होती है तो 1 एकड़ भूमि पर लगभग 40,000 लीटर पानी गिरता है। बुंदेलखंड में औसतन 600 मिलीमीटर वर्षा होती है, लेकिन हम इस वर्षा जल को संचित नहीं कर पा रहे हैं, जिससे उपजाऊ मिट्टी भी बह रही है।

इसके बाद यात्रा हिंगौरा गाँव पहुँची, जहाँ प्राथमिक विद्यालय में रात्रि विश्राम किया जाएगा। हिंगौरा गाँव के ग्रामीणों ने जल सहेलियों का गर्मजोशी से स्वागत किया। रास्ते में कई स्थानों पर लोगों ने पुष्प वर्षा कर यात्रा को संबल प्रदान किया।

जिस तरह जल सहेलियों की इस यात्रा में जनसैलाब उमड़ रहा है और लोग बढ़-चढ़कर स्वागत कर रहे हैं, यह बुंदेलखंड की पहली ऐसी यात्रा बन गई है, जिसमें इतनी बड़ी संख्या में महिलाएँ पदयात्रा कर रही हैं। वे अपने अनुभवों और अपने गाँवों में किए गए जल संरक्षण प्रयासों के मॉडल को साझा कर रही हैं, जिससे यह संदेश जा रहा है कि पानी का संरक्षण क्यों और कितना महत्वपूर्ण है।

छटवां दिन

जल सहेलियों के नाले से नदी बनाने के ज्ञान से ही पुर्नजीवित हो सकती हैं नदियां

बुंदेलखंड के जल विज्ञान को समझकर ही पानीदार बनाया जा सकता है बुंदेलखंड बरुआ नदी का पुनर्जीवित होना: जल सहेलियों का ऐतिहासिक प्रयास

बुंदेलखंड में जल संकट से निपटने और क्षेत्रीय जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने के लिए जल सहेलियों और परमार्थ संस्थान द्वारा किए गए प्रयासों ने अब एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर तय किया है। बरुआ नाला, जो पहले एक गंदा नाला हुआ करता था, अब एक स्वच्छ और अविरल बहने वाली नदी के रूप में पुनर्जीवित हो चुका है। यह सफलता जल सहेलियों के अथक प्रयासों का परिणाम है, जिन्होंने न केवल इस नाले को नदी में बदलने के लिए संघर्ष किया, बल्कि जल संरक्षण के महत्व को भी अपने प्रयासों से प्रमाणित किया।

जल सहेलियों की जल यात्रा ने अब तक 10,000 से अधिक लोगों को जल संरक्षण के प्रति जागरुक किया है। यह यात्रा आज 6वें दिन बरुआ नदी पहुंची, जहां स्थानीय नागरिकों और पदयात्रियों ने नदी की पूजा अर्चना की और बरुआ नदी की तरह अपने-अपने क्षेत्रों में नदियों को पुनर्जीवित करने का संकल्प लिया। यात्रा में शामिल सभी लोगों ने मानव श्रृंखला बनाकर सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर जोर दिया और जल संरक्षण की दिशा में एकजुटता का संदेश दिया।

यह यात्रा अब टीकमगढ़ के मोहनगढ़ क्षेत्र की ओर बढ़ चुकी थी, जहां अगले पांच दिनों में 50 से अधिक गाँवों में जल संरक्षण की अलख जगाई गयी । यात्रा में सैकड़ों जल सहेलियों के साथ बच्चे भी उत्साहपूर्वक शामिल हुयें, जो जल संरक्षण के महत्व को समझते हुए इसके प्रचार-प्रसार में जुटे हुए थे ।

सातवाँ दिन

संगठन में शक्ति है, जब संगठन संघर्ष करता है तो सफलता निश्चित होती है – नितेंद्र सिंह राठौर

पृथ्वीपुर (टीकमगढ़), 08 फरवरी– बुंदेलखंड में जल संकट के समाधान और जल संरक्षण के प्रति जागरुकता फैलाने के उद्देश्य से जल सहेलियों की पदयात्रा अपने सातवें दिन में प्रवेश कर चुकी थी । इस दौरान जल सहेलियों ने विभिन्न स्थानों पर मिट्टी और पानी की गुणवत्ता जांच का प्रदर्शन किया, जिससे जल स्रोतों की वास्तविक स्थिति का आकलन किया जा सके।

इस यात्रा के माध्यम से हम लोगों को टोंटी लगाने का आह्वाहन कर रहे हैं ।

जल सहेलियों की यह यात्रा अचर्रा गांव से प्रारंभ होकर कुशलपुरा, कंचनपुरा, मोहनगढ़, शंकरगढ़ और कुलापुरा , मस्तापुरा, पंचमपुरा, कौड़िया, दरगांय, गोर गांवों से होकर गुजरी, जहां ग्रामीणों ने इस यात्रा का भरपूर समर्थन किया। यात्रा की शुरुआत प्रार्थना के साथ हुई, जिसके बाद गांव के लोगों के साथ नुक्कड़ बैठक का आयोजन किया गया। इसमें जल संरक्षण और जल प्रबंधन के महत्व पर चर्चा की गई। इसके बाद यात्रा अचर्रा धाम तालाब पहुंची, जहां आरती कर जल संरक्षण का संकल्प लिया गया।

यात्रा के दौरान अचर्रा मुख्य बाजार में गोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें लगभग 300 लोगों ने भाग लिया और जल सहेलियों का अभिनंदन किया। इस यात्रा में सरस्वती शिशु मंदिर, अचर्रा के सैकड़ों छात्र-छात्राओं और शिक्षकों ने भी सहभागिता निभाई। जनपद सदस्य राधा चरण दागी ने भी यात्रा में शामिल होकर जल सहेलियों का हौसला बढ़ाया।

आठवां दिन

पग-पग जल सहेलियों की यात्रा, गांव-गांव में जागरूकता

यात्रा के आँठवे दिन जल सहेलियों के द्वारा किए गए प्रयासों पर हुई चर्चा

टीकमगढ़ – बुंदेलखंड की जल सहेलियों की जल यात्रा आठवें दिन टीकमगढ़ जिले के यात्रा गोर गांव से प्रारंभ होकर जगत नगर तिगैला, मझगुवां तिगैला,खेड़ा , शिवराजपुर, हीरानगर से होते हुए आलमपुर गांव में पहुंची, जहां यात्रा का ठहराव हुआ। जल सहेलियों की यह यात्रा जल संरक्षण की अलख जगा रही है और गांव-गांव में तालाबों, कुओं व नदियों के पुनर्जीवन का संदेश दे रही है।

ग्रामीणों को जल प्रबंधन में भागीदारी के लिए प्रेरित करने के लिए चौपालों का आयोजन किया गया, जहां बुंदेलखंड में सूख चुके जल स्रोतों को फिर से जीवंत करने के उपायों पर चर्चा हुई।

यात्रा के दौरान जल सहेलियों के द्वारा किए गए जल संरक्षण के प्रयासों पर बनी दो प्रमुख फिल्मों का भी जिक्र किया गया। "सिस्टम ऑफ अर्थ" फिल्म में जल सहेलियों के संघर्ष और योगदान को दिखाया गया है, जबकि "बूंद, ब्लू डायमंड" फिल्म बुंदेलखंड में पानी की समस्या और उसके समाधान को उजागर करती है। इन फिल्मों के माध्यम से जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है।

ग्राम खेड़ा में जल सहेलियों ने एक चौपाल का आयोजन किया, जहां समुदाय को जल संकट और उसके समाधान के बारे में जानकारी दी गई। यात्रा के दौरान 59 नई जल सहेलियां इस अभियान से जुड़ीं। इस यात्रा के माध्यम से लोगों को जल संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। यात्रा में शामिल समुदाय के लोगों ने संकल्प लिया कि वे अपने गांव के तालाब, कुएं और बावड़ियों को पुनर्जीवित करने में सक्रिय भूमिका निभाएंगे ।

> **पानी हमारे जीवन की धारा है, और इसे बचाना हमारा कर्तव्य है। जल सहेली बनने के बाद मैंने महसूस किया कि हर बूँद की कीमत समझनी चाहिए, तभी हम अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए एक सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित कर सकते हैं।**
>
> **– जल सहेली, सीमा**

नवां दिन

बुंदेलखंड के चंदेला-बुंदेला तालाबों के संरक्षण हेतु बनाया जाए तालाब संरक्षण प्राधिकरण

चंदेला-बुंदेला तालाबों का सर्वेक्षण कर किया जाये डिजिटल रिकार्ड तैयार

बुंदेलखंड के पारंपरिक जल स्रोत, विशेष रुप से चंदेला-बुंदेलाकालीन तालाब, जो इस क्षेत्र की जल संरचना और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहे हैं, ऐसे तालाबों के संरक्षण के लिए तालाब संरक्षण प्राधिकरण का गठन किया जाये, यह बात जल सहेलियों की जल यात्रा के दौरान आज टीकमगढ में की गई जल चैपाल में निकलकर आया। यात्रा अपने 9वें दिन टीकमगढ पहुची है, जल यात्रा के दौरान विगत दिनों कई गांवों में चंदेला-बुदेंला तालाबों के भ्रमण के दौरान यह लगातार निकल कर आ रहा है ऐसे पारंपरिक एवं ऐतिहासिक जल स्त्रोतों के संरक्षण के लिए मध्य प्रदेश सरकार को तालाब प्राधिकरण का गठन करना चाहिए, ताकि यह प्राधिकरण तालाबों के पुनरुद्धार, संरक्षण, जल प्रबंधन के लिए प्रभावी रुप से कार्य कर सके।

आज जल सहेलियों की जल यात्रा का आलमपुरा में संरपच दिनेश अहिरवार ने पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। यात्रा आंनदपुर ग्राम पंचायत होते हुए टीकमगढ शहर पहुची जहां जल चैपाल का आयोजन किया गया।

> **जल सहेली के रुप में, हम केवल पानी बचाने की बात नहीं करते, बल्कि हम यह संदेश फैलाते हैं कि हर एक व्यक्ति को जल का सम्मान करना चाहिए और इसके संरक्षण के लिए कदम उठाने चाहिए।**
>
> **– जल सहेली, सोनम**

दसवां दिन

अस्तित्व खोते बुंदेलखंड के चंदेल कालीन तालाब, पुनर्जीवन की जरुरत

यात्रा के दसवें दिन पपौराजी जैन तीर्थ पहुंची जल सहेलियों का पैदल मार्च

जल सहेलियों द्वारा जल संरक्षण के लिए निकाला गया यह पैदल मार्च एक ऐतिहासिक और प्रेरणादायक कदम है, जो गांधी जी के आंदोलनों की याद दिलाता है। जिस तरह महात्मा गांधी ने देश की आज़ादी के लिए अपनी यात्रा शुरु की थी, ठीक उसी तरह जल सहेलियों ने बुंदेलखंड में पानी की किल्लत से निपटने के लिए अपना कदम बढ़ाया है। यह मार्च न केवल जल बचाने की जागरूकता फैला रहा है, बल्कि यह एक महिला नेतृत्व वाले सामाजिक आंदोलन का प्रतीक बन गया है यह बात सभा को संबोधित करते हुए एकता परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष रणसिंह परमार ने कही |

जल यात्रा आज अपने दसवें दिन टीकमगढ़ के बड़ा तालाब से होते हुए अंगड़ा, पपौरा जी, माडूमर, पठा, बटपुरा, जरउआ और गुदनवारा पहुंची।

इस दौरान शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पठा में जल सहेलियों द्वारा जल चौपाल का आयोजन किया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं को जल सहेलियों द्वारा जल संरक्षण के उपायों के बारे में जानकारी दी गई।

बुंदेलखंड का ऐतिहासिक धरोहर, चंदेल कालीन तालाब, जो कभी इस क्षेत्र की जल आपूर्ति का प्रमुख स्रोत थे, आज अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। टीकमगढ़ जिले में लगभग 10,000 से ज्यादा छोटे-बड़े ताल-तलैया हुआ करते थे, लेकिन समय के साथ ये तालाब अतिक्रमण की चपेट में आकर अब लगभग 500 के आसपास रह गए हैं। पहले टीकमगढ़ चारों ओर से नहरों से घिरा हुआ था और पानी से भरपूर था, लेकिन आज पानी की समस्या काफी बढ़ गई है। इस दौरान पं. शिवेंद्र द्विवेदी जी, रंजन अग्निहोत्री और जैन समिति के सदस्यों ने जल सहेलियों का जैन तीर्थ में स्वागत किया और यात्रा को सराहनीय कदम बताया। यात्रा में स्थानीय गांव के लोग और सैकड़ों छात्र छात्राओं सहित जल सहेलियां यात्रा में शामिल रहीं।

ग्यारहवां दिन

टीकमगढ में स्थापित हो तालाब विश्वविद्यालय, जल संरक्षण की विरासत को मिले नई पहचान

टीकमगढ बुंदेलखंड का एक ऐसा जिला, जहां सदियों से जल संरक्षण की समृद्ध परंपरा रही है, आज इस धरोहर को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। टीकमगढ में देश की पहला तालाब विश्वविद्यालय (पॉन्ड यूनिवर्सिटी) की स्थापना होनी चाहिए यह बात आज टीकमगढ में जल सहेलियों की जल यात्रा की प्रेस वार्ता में जल सहेली संगठन के संस्थापक डा0 संजय सिंह ने कही। उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र प्राचीन काल से तालाबों के वैज्ञानिक प्रबंधन का केंद्र रहा है, कभी टीकमगढ और निवाडी में छोटे-बडे 1,040 चंदेलकालीन तालाब हुआ करते थे, लेकिन वर्तमान में लगभग 500 तालाब ही शेष हैं। यह दर्शाता है कि जल संरक्षण की पारंपरिक व्यवस्थाएं धीरे-धीरे लुप्त हो रही हैं, जिन्हें पुनर्जीवित करना अनिवार्य है। देश में पशुपालन, कृषि, वानिकी और मत्स्य पालन से जुडे विश्वविद्यालय मौजूद हैं, लेकिन जल संरक्षण के सबसे बडे स्रोत तालाबों पर कोई समर्पित विश्वविद्यालय नहीं है। जबकि, धरती पर नदियों और समुद्र के बाद जल संचयन का सबसे बडा केंद्र तालाब ही होते हैं। यदि सरकार वास्तव में जल प्रबंधन को सुदृढ करना चाहती है, तो टीकमगढ में तालाब विश्वविद्यालय की स्थापना अवश्य करे। यह विश्वविद्यालय पारंपरिक जल विज्ञान, आधुनिक जल संरक्षण तकनीकों और सामुदायिक सहभागिता के अध्ययन का केंद्र बनेगा। प्रेस वार्ता के बाद पदयात्रा आज 11वें दिन ग्राम पंचायत गुदनवारा, बसगोई, अजनौर सहित 1 दर्जन गांवों होते हुए बडागांव पहुची। यात्रा के दौरान समर्रा, राधापुर, मदनपुर संरपचों के द्वारा यात्रा का पुष्पवर्षा कर अपने-अपने क्षेत्र में स्वागत किया। इस दौरान जगह-जगह जल चैपालों का आयोजन किया गया, जहां पदयात्री के रुप में चल रही जल सहेलियों के द्वारा समुदाय को जल संरक्षण का पाठ पढाया।

बारहवां दिन

जल संरक्षण कोई कार्य नही हमारा कर्तव्य

जल सहेलियों की जल यात्रा ने 12वे दिन टीकमगढ़ जिले से छतरपुर जिले में प्रवेश किया, इस दौरान जल सहेलियों के द्वारा धसान नदी की पूजा अर्चना की गई, गांव-गांव जल चौपाल का आयोजन कर ग्रामीणों से क्षेत्र के चंदेला, बुंदेला तालाबो के संरक्षण एवं छोटी नदियों के पुनर्जीवन को लेकर चर्चा की।

इस अवसर पर बडामलहरा क्षेत्र की पूर्व विधायक रेखा यादव के द्वारा छतरपुर जिले की सीमा पर जल सहेलियों के स्वागत किया।

जल संरक्षण के महत्व को रेखांकित करते हुए यात्रा के दौरान वक्ताओं ने कहा कि अन्न की पैदावार पानी से होती है, लेकिन अन्न से पानी नहीं उगाया जा सकता। इसलिए जल सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। जल सहेलियों ने इस यात्रा के माध्यम से जल संरक्षण के लिए संकल्प लिया है और इसमें समाज के सभी लोगों को उनका साथ देना चाहिए। जल सहेलियां अपने प्रयासों से जल संकट से निपटने के लिए जो योगदान दे रही हैं, वह सराहनीय है और इसे जन आंदोलन का रुप देना आवश्यक है।

इस अवसर पर फ़िल्म अभिनेता आरिफ शाहड़ोली ने जल संरक्षण पर आधारित फिल्म बूंद का भी उल्लेख किया गया, जिसमें जल सहेलियों के कार्यों को दिखाया गया है। फिल्म में यह बताया गया है कि जल सहेलियां किस प्रकार अपने प्रयासों से सूखते जल स्रोतों को पुनर्जीवित कर रही हैं और समुदाय को जल संरक्षण की दिशा में प्रेरित कर रही हैं।

तेरहवां दिन

छोटी नदियों के पुर्नजीवन से ही बचेगी मां गंगा ही अविरल, निर्मल धारा

बुंदेलखंड में जल संकट से निपटने के लिए जल सहेलियों द्वारा निकाली जा रही जल यात्रा ऐसे समय में और भी प्रासंगिक हो गई है, जब हाल ही में यूनाईटेड नेशन्स की रिपोर्ट में बताया गया है कि 2050 तक गंगा नदी में पानी नहीं रहेगा। यूनाइटेड नेशन्स की रिपोर्ट के अनुसार, हिमालयी ग्लेशियरों के तेजी से पिघलने और जलवायु परिवर्तन के कारण गंगा जैसी जीवनदायिनी नदी भी जल संकट का सामना कर सकती है। ऐसी स्थिति में, जल संरक्षण की दिशा में किए जा रहे प्रयास और भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। जल सहेलियों की यह यात्रा न केवल जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढाने का कार्य कर रही है, बल्कि समुदाय को अपनी पारंपरिक जल संरचनाओं को पुनर्जीवित करने के लिए प्रेरित भी कर रही है। जब भविष्य में गंगा जैसी विशाल नदी के जल संकट की संभावना जताई जा रही है, तब बुंदेलखंड जैसे पहले से ही जल-संकटग्रस्त क्षेत्र में जल संरक्षण के प्रयासों को करना और भी अधिक आवश्यक हो जाता है। जल सहेलियों का यह संकल्प आने वाली पीडियों के लिए जल संकट को कम करने की दिशा में एक सकारात्मक पहल है।

इसी पहल को आगे बढाते हुए जल सहेलियों की जल यात्रा के 13वें दिन छतरपुर के घुवारा क्षेत्र पहुची, जहां क्षेत्र भर के 2 दर्जन से अधिक संरपचों के द्वारा यात्रा का स्वागत किया गया। इस दौरान 10 से अधिक जगहों पर पदयात्री के रुप में चल रही जल सहेलियों के द्वारा जल चैपालों का आयोजन किया गया।

इस दौरान जल सहेलियों ने लोगों को गंगा नदी पर आई ताजा रिपोर्ट से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि आज हम श्रद्धा के साथ प्रयागराज जाकर गंगा में स्नान करते हैं, कुंभ जैसे महापर्व गंगा के निर्मल प्रवाह से ही संभव होते हैं। लेकिन यदि 2050 तक गंगा में पानी ही नहीं बचा, तो आने वाली पीढियां इस पावन परंपरा और इसकी आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत से वंचित रह जाएंगी। इसलिए हमें अभी से सचेत होने की जरुरत है। जब हम अपने-अपने क्षेत्र की छोटी नदियों और तालाबों को संरक्षित कर उनका पुनर्जीवन करेंगे, तभी गंगा जैसी बडी नदियों का अस्तित्व बना रहेगा और हमारी हजारों साल पुरानी सभ्यता को भी संजीवनी मिलेगी। जल संरक्षण सिर्फ पर्यावरणीय आवश्यकता नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा भी है।

चौदहवां दिन

खेती में जल उपयोग दक्षता को बढाकर करे पानी का संचय

देश में खेती, पानी के उपयोग का सबसे बडा क्षेत्र है, कुल उपलब्ध जल संसाधनों का लगभग 80-85 प्रतिशत पानी वर्तमान में खेती में खर्च हो रहा है। इसमें से अधिकतर पानी भूजल से लिया जाता है। अत्यधिक हो रहे जल दोहन के कारण भूजल स्तर तेजी से गिर रहा है। ऐसे मेें हमें जल उपयोग दक्षता बढाने वाली तकनीकों का उपयोग किया करना चाहिए, जिससे खेती में पानी की खपत को 30-50 प्रतिशत तक कम किया जा सके। इसके लिए सरकार के द्वारा विभिन्न योजनाओं का संचालन भी किया जा रहा है, जिसका लाभ सभी किसान ले सकते है, यह बात आज जल सहेलियों की जल यात्रा के 14वें दिन जल सहेली सीमा ने जल चैपाल को संबोधित करते हुए कही।

आज जल सहेलियों की जल यात्रा बडामलहरा क्षेत्र के लिधौरा, पिपरा, सेंधपा होते हुए 1 दर्जन गांवों से गुजरी। यात्रा में जल उपयोग दक्षता के बारे में जल सहेली कंचन ने किसानों को समझाते हुए कहा कि यदि जल प्रबंधन को वैज्ञानिक तरीके से किया जाए, तो कम पानी में भी खेती संभव है और उत्पादन में बढोतरी की जा सकती है। अपने खेतों में माइक्रो-इरीगेशन सिस्टम अपनाएं, फसल चक्र को लागू करें। इससे खेती की लागत भी घटेगी और भविष्य में जल संकट से निपटने में मदद मिलेगी। पानी के संरक्षण का संदेश को लेकर हम सभी जल सहेलियां गांव-गांव में जल यात्रा कर रहे हैं, ताकि एक ओर हमारे पुराने ऐतिहासिक जल स्त्रोतों को पुर्नजीवित किया जा सके वही दूसरी ओर लोगों को कम पानी का उपयोग को लेकर संवेदित हो सकें।

पन्द्रहवां दिन

समाज और सरकार की भागीदारी बना सकती बुंदेलखंड को पानीदार

आज जल सहेलियों की जल यात्रा 15वे दिन श्री 1008 श्री श्री राम मारुति बड़ा भक्तमाल आश्रम, टूढ़ेबार, बड़ा मलहरा से शुभारम्भ हुयी| इस अवसर पर नगर परिषद बड़ामलहरा के सभागार में स्वागत समारोह आयोजन किया गया| स्वागत समारोह में पूर्व विधायक प्रदुम्र सिंह लोधी नगर परिषद अध्यक्षा श्रीमती निशा राजा बुंदेला, सीएमओ उमाशंकर मिश्रा सहित जल सहेलिया एवं कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

स्वागत समारोह के दौरान जल यात्रा में पदयात्री के रुप में चल रही जल सहेली लक्ष्मी, सीमा, आरती और पुष्पा ने अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि यात्रा के दौरान ऐसा कोई गाँव नहीं मिला जहाँ जल स्त्रोत उपलब्ध न हो या जिसके किनारे से कोई छोटी या बड़ी नदी न गुजरती हो। समस्या यह नहीं कि पानी नहीं है, बल्कि हमने इन जल संरचनाओं के संरक्षण और प्रबंधन पर ध्यान नहीं दिया, जिससे वे क्षत-विक्षत अवस्था में पहुँच गई हैं। यदि हम अपने-अपने गाँव में मौजूद इन संरचनाओं का सही तरीके से रखरखाव करें, तो पानी की कमी की समस्या से आसानी से निपटा जा सकता है।

यात्रा के दौरान पहाड़ों पर पेड़ों की अहमियत पर जोर देते हुए कहा कि पानी बचाने के लिए हमें जंगलों और नदियों का संरक्षण करना होगा। उन्होंने कहा कि यह जल यात्रा केवल पानी बचाने का संदेश ही नहीं देती, बल्कि प्रकृति में बस रहे समस्त जीवन को संरक्षित करने का भी संदेश देती है। उन्होंने बताया कि जब देश आजाद हुआ था, तब 10% क्षेत्र सूखा प्रभावित था और 4% क्षेत्र बाढ़ प्रभावित था, लेकिन समय के साथ यह समस्या लगातार बढ़ रही है। आज कोई भी प्रदेश ऐसा नहीं बचा है, जो सूखा या बाढ़ की समस्या से अछूता हो। इसलिए यह वर्तमान की आवश्यकता है कि समाज और सरकार पानी के मोल को पहचाने और संरक्षित करने का प्रयास करे|

सोलहवां दिन

बिजावर के जंगल मध्य प्रदेश की अनोखी पर्यावरण धरोहर

यात्रा के बाद जल सहेलियों का एक समूह खजुराहो में आये मुख्यमंत्री जी से मिलने पंहुचा, जहाँ जल सहेलियों ने मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को यात्रा के अनुभव साझा किये।

छतरपुर जिले के बिजावर के जंगल मध्य प्रदेश के लिए एक अनोखी और महत्वपूर्ण धरोहर हैं। यह क्षेत्र न केवल जैव विविधता से भरपूर है, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में भी अहम भूमिका निभाता है। यहां पाए जाने वाले दुर्लभ वनस्पति और जीव-जंतु न केवल इस क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि इनका पूरे प्रदेश के पारिस्थितिकी तंत्र पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बिजावर के जंगलों की हरियाली और जलवायु नियंत्रित करने वाली क्षमता इसे अन्य क्षेत्रों से अलग बनाती है। यह जंगल न केवल जल संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि स्थानीय समुदायों के जीवन यापन का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इनके बिना क्षेत्रीय जलवायु और प्राकृतिक संसाधनों पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है, जिससे पूरी पर्यावरणीय संरचना में असंतुलन उत्पन्न हो सकता है।

आज, जल सहेलियों की जल यात्रा के 16वें दिन इन बिजावर के जंगलों के बीच से निकली। इस दौरान जल सहेलियों ने इन जंगलों और पेड़ों की रक्षा का संकल्प लिया। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण सिर्फ एक व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि यह संपूर्ण मानवता से जुड़ा है। उनका उद्देश्य जल के महत्व को समझाना और पूरे समुदाय को इस आंदोलन से जोड़ना है। यह देखकर खुशी होती है कि हर गांव में लोग उनके साथ हैं, और यही सहयोग इस अभियान को सफल बनाएगा। इस दौरान जल यात्रा जिस भी गाँव में गयी वहां के ग्रामवासियों ने कहा कि हम जल सहेलियों के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जो अपने घर-परिवार से दूर रहकर हमारे गांव के जल संकट की चिंता कर रही हैं। वे महिलाएँ होते हुए भी जल संरक्षण का संदेश दे रही हैं, जो प्रेरणादायक है। हम वचन देते हैं कि उनके प्रयास व्यर्थ नहीं जाएंगे और जल बचाने के लिए हरसंभव प्रयास करेंगे, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी सुरक्षित रह सके।

> **हमारी यह यात्रा केवल जल के संरक्षण की नहीं, बल्कि हमारे पर्यावरण और समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी की है। जल सहेली बनकर मैं गर्व महसूस करती हूं कि मैं इस कार्य में योगदान दे रही हूं।**
>
> **– जल सहेली, श्रीकुंवर**

सत्रहवां दिन

जल सहेलियों ने जल यात्रा के अनुभव मुख्यमंत्री के साथ किये साझा

खजुराहो में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने जल सहेलियों से कन्वेंशन सेंटर में मुलाकात की|इस दौरान उन्होंने जल सहेलियों से बुंदेलखंड की जल संरक्षण की पारंपरिक पद्धतियां एवं तालाब, नदियों के ऊपर संवाद किया| जल सहेलियों ने अपनी यात्रा के बारे में बताया कि 02 फरवरी से शुरु हुयी यह यात्रा 20 फरवरी को जटाशंकर तक पहुच रही है| जल सहेलियों ने यात्रा के दौरान के अनुभव मुख्यमंत्री को साझा किये और इस यात्रा में आने का लिए आग्रह किया| जल सहेलियों ने कहा कि चंदेल और बुंदेली तालाबों का वैज्ञानिक तरीके से पुनर्जीवन बुंदेलखंड की नदियों को संजीवनी दे सकता है। जल संरक्षण के लिए सघन वृक्षारोपण, जल संचयन, और सामुदायिक भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता है| जल कर संग्रहण की जिम्मेदारी समर्पित कैडर को सौंपने, कम पानी वाली फसलों को अपनाने और स्प्रिंकलर सिंचाई को बढ़ावा देने की सिफारिश, साथ ही पारंपरिक जल स्रोतों के संरक्षण के लिए 'पॉन्ड यूनिवर्सिटी' की मांग उठाई। इस यात्रा से अब तक 6 लाख से अधिक लोग जागरुक हुए हैं, और अभियान जारी रहेगा।

मुख्यमंत्री ने यात्रा को अपना संबल देते हुए कहा की वह जल सहेलियों के साथ है, जिसमे बुंदेलखंड में जल संरचनाओ के संरक्षण एवं संवर्धन पर योजनाबद्ध ढंग से कार्य करेगी| इस अवसर पर जल सहेली सीमा यादव, रजनी अहिरवार, ममता राजपूत, पुष्पा कुशवाहा, लक्ष्मी कुशवाहा, दीपा मजूमदार, रेखा रही।

इस दौरान जल सहेली संगठन के संस्थापक डॉ. संजय सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री ने जिस तरह से अपने संक्षिप्त कार्यक्रम में जल सहेलियों को खजुराहो आमंत्रित किया और मुलाकात कर जल यात्रा का संबल बढ़ाया वह निश्चित तौर से बुंदेलखंड में जल संरक्षण की दिशा में किये जा रहे प्रयासों का समर्थन एवं संवल है।

आज 17वे दिन जल सहेलियों की जल यात्रा ग्राम नयाताल से चलकर बिजावर पहुची, जहाँ पर यात्रा का स्वागत किया गया, यात्रा 20 फरवरी को जटाशंकर धाम पहुचेगी जहाँ यात्रा का समापन किया जायेगा, समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान शिरकत करेंगे।

अट्ठारहवां दिन

केन्द्रीय कृषि मंत्री की उपस्थिति में जल सहेलियों की जल यात्रा का जटाशंकर में होगा समापन

जल संरक्षण को जन आंदोलन में बदलने और पारंपरिक जल संसाधनों के पुनर्जीवन के उद्देश्य से जल सहेलियों द्वारा आयोजित ऐतिहासिक जल यात्रा 20 फरवरी 2025 को जटाशंकर धाम में संपन्न होगी। इस अवसर पर केंद्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे।

इस यात्रा का उद्देश्य बुंदेलखंड के चंदेला, बुंदेला तालाबो प्रबंधन एवं छोटी नदियों के पुनर्जीवन को बढ़ावा देना जिससे समुदाय को जल संरक्षण के कार्य से जोड़ा जा सके। 2 फरवरी से शुरु हुई इस यात्रा में जल सहेलियों ने 300 किमी की दूरी तय की, इस दौरान जल सहेलियां निवाड़ी, झांसी, ललितपुर, टीकमगढ़ और छतरपुर जिलों से होकर गुजरी। ।

यात्रा के दौरान प्रत्येक दिन जल सहेलियों के द्वारा 17-18 किमी की दूरी तय 1 सैकड़ा से अधिक गाँवो में सीधा संवाद किया और जाति और समुदाय की सीमाओं से परे जल संकट के समाधान के लिए एकजुट रही। जल सहेलियों का उद्देश्य केवल जागरुकता फैलाना नहीं, बल्कि स्थायी समाधान की दिशा में ठोस कार्यवाही करना है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ शुद्ध जल पिएं और स्वच्छ हवा में सांस लें। इसलिए यात्रा के दौरान गाँवों में जल चौपालों का आयोजन किया गया, जहाँ ग्रामीणों के साथ जल संकट और उसके समाधान पर विचार-विमर्श हुआ। साथ ही, तालाबों, कुओं और छोटी नदियों के पुनर्जीवन के लिए प्रेरित किया गया। गाँवों के जल स्रोतों पर आरती की गई।

समापन समारोह में जल सहेलियाँ अपनी यात्रा के अनुभव और सीख केंद्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के समक्ष रखेंगी। बुंदेलखंड की पारंपरिक जल संरचनाओं को पुनर्जीवित करने और जल संकट से निपटने के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। इस अवसर स्थानीय राजनेता, प्रशासन, जल सहेलियाँ, जल योद्धा उपस्थित रहेंगे ।

> **हमें अपनी प्राकृतिक धरोहर को एक व्यवस्थित तरीके से बचाना चाहिए। सरकार को चाहिए कि वह चंदेल-बुंदेलाव क्षेत्र के सभी जलाशयों का विस्तृत सर्वे कराए, उनके स्थिति का डिजिटल रिकॉर्ड बनाए, और एक तालाब डेटा प्रबंधन प्रणाली तैयार करे। हम, जल सहेलियां, इस प्रयास में हर संभव मदद करने के लिए तैयार हैं।**
>
> **- जल सहेली, लक्ष्मी कुशवाहा**

अंतिम दिन

जल यात्रा का अंतिम दिन और समापन समारोह

- जटाशंकर धाम में

20 फरवरी 2025 को, 20 दिनों तक चलने वाली जल यात्रा का समापन हुआ। यह यात्रा ओरछा से शुरु होकर लगभग 300 किमी की दूरी तय कर जटाशंकर धाम पहुंची। इस यात्रा में कई गांवों को पार करते हुए जल संरक्षण का संदेश दिया गया, खासकर चंदेल काल के तालाबों और छोटी नदियों के पुनर्जीवन पर ध्यान केंद्रित किया गया। जल सहेलियों का जन आंदोलन समुदाय से अपार समर्थन प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ रहा था , जल सहेलियों के साथ हजारों महिलाएं जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए यात्रा में शामिल हुईं। सैकड़ों जल सहेलियों के साथ, जल सहेली संगठन के संस्थापक डॉ. संजय सिंह ने ओरछा से जटाशंकर धाम तक की यात्रा पूरी की।

यात्रा के अंतिम दिन 300 से अधिक जल सहेलियों ने अपने गंतव्य की ओर मार्च करना शुरु किया। मार्ग में एक सूखा हुआ बरसाती नाला मिला, जो जटाशंकर में बहने वाली छोटी नदी स्यामरी, जो प्राकृतिक रुप से यहां से गुजरती है, पर निर्भर है। इस नदी में नवम्बर माह तक पानी रहता है । यह नदी पास के 22 परिवारों के लिए पीने का मुख्य जल स्रोत है। जब यह नाला सूख जाता है, तो गांववाले 5 से 6 किलोमीटर दूर पानी लाने को मजबूर होते हैं। एक छोटे से विश्राम स्थल पर, जहां पीपल के पेड़ के नीचे जल सहेलियों ने जल संरक्षण पर गीत गाए। एक वरिष्ठ पत्रकार ने उनकी निष्ठा की सराहना की और जल संरक्षण के लिए अपने घरों और बच्चों को छोड़ देने के उनके बलिदान को स्वीकार किया। डॉ. संजय सिंह ने फिर यात्रा के मुख्य क्षणों पर विचार किया और जल सहेलियों के दृढ़ संकल्प को सलाम किया, उन्हें जल संरक्षण आंदोलन में बदलाव लाने वाले के रुप में सम्मानित किया।

जल सहेली मंजू लता ने डॉ. संजय सिंह को यात्रा आयोजित करने के लिए धन्यवाद दिया और सभी जल सहेलियों से इस यात्रा से सीखी गई बातों को अपने-अपने क्षेत्रों में जल संरक्षण के प्रयासों में लागू करने की अपील की। बुजुर्ग सहभागी भूरे लाल ने जल सहेलियों पर फूलों की वर्षा कर अपनी सराहना व्यक्त की।

जल सहेलियों रेखा और मीरा ने घुरारी नदी के पुनर्जीवन के अपने अनुभव साझा किए, यह बताते हुए कि यद्यपि यात्रा समाप्त हो रही है, जल संरक्षण का उनका मिशन और भी उत्साह के साथ जारी रहेगा। उन्होंने यह भी कहा कि विभिन्न जिलों की जल सहेलियों की एकता ने यात्रा को अविस्मरणीय बना दिया। इसके बाद यात्रा ने अपने अंतिम गंतव्य की ओर रुख किया।

केंद्रीय कृषि, किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने जटाशंकर धाम पहुंचकर यात्रा में भाग लिया और 100 पेड़ लगाए, जिसमें 20 से अधिक जल सहेलियां भी शामिल थीं। कलश आरती करने के बाद उन्होंने 2 किमी तक जल सहेलियों के साथ पैदल यात्रा की, उनके साथ हजारों लोग जल सहेलियों का स्वागत करने के लिए इकट्ठा हुए थे।

समापन समारोह की शुरुआत कन्या पूजन से हुई। श्री शिवराज सिंह चौहान ने व्यक्तिगत रुप से उन जल सहेलियों के पांव धोए जिन्होंने पूरी 300 किमी यात्रा की थी। बिजावर के विधायक श्री राजेश शुक्ला ने परमार्थ समाजसेवी संस्थान और डॉ. संजय सिंह का आभार व्यक्त किया और जल सहेलियों की मेहनत और समर्पण की सराहना की।

डॉ. संजय सिंह ने सभा को संबोधित करते हुए कार्यक्रम में भाग लेने वाले अतिथियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने 20 दिन की यात्रा के दौरान सामने आई चुनौतियों को साझा किया और बताया कि किस तरह समुदाय ने इस आंदोलन को अपनाया और समर्थन किया।

उन्होंने गर्व से बताया कि यह यात्रा स्वयं के अंशदान से थी, जिसमें जल सहेलियों ने 5 लाख रुपये दान किए थे, बिना किसी बाहरी संस्थागत सहायता के। यात्रा के हर पड़ाव पर मिली अपार समर्थन ने यह सिद्ध कर दिया कि यह आंदोलन एक जन आंदोलन बन चुका है। उन्होंने यह भी बताया कि जल सहेली नेटवर्क, जिसमें वर्तमान में 2,000 सदस्य हैं, आने वाले वर्षों में एक लाख से अधिक सदस्यों तक पहुंचने का लक्ष्य है, जिससे बुंदेलखंड को पानीदार बनाया जा सके।

महत्वपूर्ण कदम के रुप में, डॉ. संजय सिंह ने जल सहेलियों के साथ मिलकर 'जल यात्रा मांग पत्र' केंद्रीय मंत्री को प्रस्तुत किया। इस पत्र में यात्रा के दौरान सामने आई समस्याएं और समुदाय की महत्वपूर्ण मांगें दर्ज थीं। इसके जवाब में श्री शिवराज सिंह चौहान ने जल सहेलियों और उपस्थित जनसमूह के साथ 'जल शपथ' (जल संकल्प) लिया, जो जल संरक्षण के प्रयासों को जारी रखने का वचन था।

अपने संबोधन में श्री शिवराज सिंह चौहान ने जल सहेलियों की समर्पण और साहस की गहरी सराहना की। उन्होंने स्वीकार किया कि अपनी कई प्रतिबद्धताओं के बावजूद, उन्होंने इस कार्यक्रम में भाग लिया क्योंकि वे जल सहेलियों के प्रयासों के प्रति सम्मान रखते हैं। उन्होंने जल संरक्षण की महत्ता पर जोर दिया और चेतावनी दी कि जल स्तर गिरने से भविष्य पीढ़ियों के लिए खतरा हो सकता है। उन्होंने जल प्रबंधन के लिए चेकडेम, बोरी बंधन, एनीकट्स और जलग्रहण क्षेत्र के दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता की बात की। जल सहेलियों को 'आधुनिक भारत के भागीरथ' के रुप में सम्मानित करते हुए, उन्होंने उन्हें भारत के जल संरक्षण प्रयासों के अग्रदूत के रुप में मान्यता दी।

श्री शिवराज सिंह चौहान ने यह भी घोषणा की कि सरकार जल सहेलियों को वाटरशेड परियोजनाओं में शामिल करेगी और उनके साथ मिलकर जल सुरक्षा के लिए काम करेगी। इसके अलावा, उन्होंने उस समूह को 20 लाख रुपये देने का वादा किया जो उत्कृष्ट वाटरशेड कार्य करेगा। उन्होंने यह भी साझा किया कि उन्होंने पिछले चार वर्षों में, यहां तक कि कोविड-19 महामारी के दौरान, प्रतिदिन एक पेड़ लगाया है, यह बताते हुए कि पेड़ मिट्टी की नमी बनाए रखने, कटाव को कम करने और ऑक्सीजन उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उन्होंने डॉ. संजय सिंह का धन्यवाद करते हुए जल सहेलियों को सरकारी जलग्रहण कार्यक्रमों में शामिल करने पर चर्चा करने के लिए उन्हें आमंत्रित किया, ताकि जल संरक्षण और सतत जल प्रबंधन के लिए सामूहिक प्रयास किए जा सकें।समारोह का समापन एक नई प्रतिबद्धता के साथ हुआ, जिसमें सभी पक्षों ने जल संरक्षण के मिशन को आगे बढ़ाने का वचन लिया। जल सहेलियां, जो यात्रा के समापन से निराश नहीं थीं, ने बुंदेलखंड को जल संरक्षण और सतत विकास के एक मॉडल क्षेत्र बनाने के अपने प्रयासों को जारी रखने की प्रतिज्ञा ली।

> **यह यात्रा हमारे जल धरोहर को बचाने की एक अपील है। हर गांव में जाते हुए, हर व्यक्ति से मिलते हुए, हम उन्हें यह समझा रहे हैं कि पानी के बिना कोई भविष्य नहीं है। चंदेल काल के तालाबों और छोटी नदियों को फिर से जीवन देना जरुरी है, और यह हम सभी की जिम्मेदारी है।**
>
> **- जल सहेली, पुष्पा**

यात्रा के दौरान की गयी गतिविधियाँ

जल चौपाल

यात्रा के पहले दिन से ही प्रत्येक दिन गाँव-गाँव में जल चौपाल का आयोजन किया गया। इन जल चौपालों का उद्देश्य न केवल जल संकट के प्रति जागरुकता फैलाना था, बल्कि समुदाय को जल संरक्षण के लिए प्रेरित करना भी था।

इन चौपालों में जल सहेलियों ने अपने अनुभवों और प्रयासों को साझा करते हुए यह बताया कि किस प्रकार उन्होंने अपने गाँवों में जल स्रोतों के संरक्षण और पुनर्जीवन के लिए कार्य किए। जल सहेलियों ने यह भी बताया कि उन्होंने किस तरह से जल पुनर्चक्रण, वर्षा जल संचयन, और जल के सही उपयोग को सुनिश्चित किया।

साथ ही, उन्होंने समुदाय के लोगों से संवाद करते हुए यह समझाने का प्रयास किया कि जल का सही प्रबंधन सिर्फ उनके व्यक्तिगत जीवन के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे गाँव और क्षेत्र की समृद्धि के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने जल संकट से निपटने के लिए स्थानीय स्तर पर उपायों को अपनाने और जल के संरक्षण में एकजुट होकर कार्य करने का संदेश दिया।

जल चौपालों में उपस्थित लोगों ने जल सहेलियों से प्रेरणा लेकर जल बचाने के उपायों पर विचार-विमर्श किया और अपने-अपने घरों और खेतों में इन उपायों को लागू करने का संकल्प लिया। जल सहेलियों ने यह भी बताया कि कैसे उन्होंने समुदाय में जल संकट के समाधान के लिए एकजुटता और सहभागिता को बढ़ावा दिया और जल संरक्षण को एक साझा जिम्मेदारी के रुप में लिया।

किसान संवाद

यात्रा के दौरान प्रत्येक दिन गाँव-गाँव में किसान संवाद का आयोजन भी किया गया, जिसमें जल सहेलियों और किसानों ने मिलकर कृषि और जल संरक्षण के महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की।

इस संवाद सत्र में जल सहेलियों ने किसानों को यह बताया कि किस तरह से जल संकट कृषि क्षेत्र को प्रभावित कर रहा है और किस प्रकार सही जल प्रबंधन से किसानों की फसलें अधिक उत्पादक बन सकती हैं। जल सहेलियों ने किसानों को वर्षा जल संचयन, जल का पुनर्चक्रण, और सूक्ष्म सिंचाई पद्धतियों के बारे में जागरुक किया, जिससे कम पानी में अधिक उत्पादन संभव हो सके।

किसान संवाद के दौरान, जल सहेलियों ने यह साझा किया कि कैसे उन्होंने अपने क्षेत्र में जल स्रोतों को संरक्षित किया और उनके पुनर्जीवन के प्रयासों से किस तरह फसल उत्पादन में वृद्धि हुई। उन्होंने किसानों को समझाया कि जल का सही तरीके से उपयोग करने से न केवल जल संकट में कमी आएगी, बल्कि कृषि की लागत भी घटेगी और लाभ में वृद्धि होगी।

किसानों ने भी अपने अनुभव साझा करते हुए जल संरक्षण के लिए अपनाए गए उपायों पर चर्चा की और जल सहेलियों से प्रेरित होकर जल प्रबंधन के नए तरीकों को अपनाने का संकल्प लिया। उन्होंने यह भी माना कि जल बचाने के साथ-साथ खेती के तरीके बदलने से बेहतर परिणाम मिल सकते हैं और कृषि क्षेत्र को सशक्त किया जा सकता है।

पंचायतों के साथ संवाद

यात्रा के दौरान प्रत्येक गाँव में पंचायतों के साथ संवाद का आयोजन किया गया, जिसमें सरपंचों, पंचायत प्रतिनिधियों और स्थानीय लोगों ने सक्रिय रुप से भाग लिया। जल सहेलियों ने पंचायतों के साथ मिलकर जल संकट और जल संरक्षण के मुद्दों पर गहन चर्चा की, जिससे यह अभियान और भी प्रभावी बना।

पंचायतों के साथ संवाद सत्र में जल सहेलियों ने सरपंचों और स्थानीय लोगों को यह समझाया कि जल संकट न केवल उनके गाँवों की समृद्धि को प्रभावित कर रहा है, बल्कि यह पूरे समुदाय के जीवन स्तर को भी घटित कर रहा है। उन्होंने पंचायतों से आग्रह किया कि वे जल संरक्षण को एक सामूहिक जिम्मेदारी के रुप में स्वीकारें और इसे अपनी प्राथमिकताओं में शामिल करें।

सरपंचों और स्थानीय लोगों ने इस संवाद को पूरी तरह से अपनाया और जल सहेलियों के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि पंचायत स्तर पर जल संरक्षण के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएं और जल के सही प्रबंधन के लिए ग्राम पंचायतों में विशेष योजनाएं बनाई जाएं।

यात्रा का प्रभाव

नदियों और तालाबों के संरक्षण हेतु प्राधिकरण का गठन -

बुंदेलखंड क्षेत्र में सदियों पुरानी जल संरचनाएं, जैसे चंदेल और बुंदेली तालाब, आज उपेक्षित अवस्था में हैं। लेकिन आजकल इन तालाबों की उपेक्षा और प्रदूषण के कारण उनका अस्तित्व खतरे में है। इन तालाबों का संरक्षण और पुनर्जीवन, साथ ही नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को बनाए रखना, बुंदेलखंड में जल संकट को कम करने का एक महत्वपूर्ण उपाय हो सकता है। तालाबों का संरक्षण केवल पानी की उपलब्धता बढ़ाने के लिए आवश्यक नहीं है, बल्कि यह पूरे पारिस्थितिकी तंत्र और समाज की भलाई के लिए भी आवश्यक है। तालाबों की स्थिति में सुधार और उनका संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए एक विशेष तालाब संरक्षण प्राधिकरण का गठन किया जा सकता है। इस प्राधिकरण का उद्देश्य तालाबों के पुनर्निर्माण और उनके संरक्षण के लिए योजना बनाना और क्रियान्वित करना होगा। यह प्राधिकरण सरकार और स्थानीय समुदायों के बीच सहयोग बढ़ाने का कार्य करेगा। तालाबों की सफाई और मरम्मत कार्य किए जाने चाहिए ताकि उनका जलग्रहण क्षेत्र पुनः सक्रिय हो सके। पुराने और जर्जर तालाबों को ठीक करने के लिए विशेषज्ञों द्वारा काम किया जाए जैसे कि उनके किनारे मजबूत करना, जल संचयन के लिए जरूरी संरचनाओं का निर्माण करना, और पानी को अधिक समय तक संग्रहित रखने के उपाय अपनाना। इसके अलावा जल संचयन की पारंपरिक विधियों के साथ-साथ आधुनिक तकनीकों का भी इस्तेमाल किया जाना चाहिए। उदाहरण स्वरूप, वर्षा जल संचयन की नई विधियां जैसे रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम, तालाबों के पानी को एकत्र करने के लिए उच्च क्षमता वाली तकनीकें, और भूमिगत जल संचयन के उपायों को लागू किया जा सकता है। ये विधियां तालाबों की जलधारण क्षमता को बढ़ा सकती हैं।

तालाबों के साथ-साथ नदियों का भी संरक्षण महत्वपूर्ण है। बुंदेलखंड की कई नदियां, जैसे बेतवा, जामनी, धसान, काटन, बछेड़ी, बारगी और स्यामरी, क्षेत्र के लिए जीवनदायिनी का काम करती हैं। इन नदियों का पानी सीधे तालाबों में आता है, जो उन्हें भरपूर जल प्रदान करता है। हालांकि, इन नदियों की हालत भी खराब हो चुकी है। नदियों में प्रदूषण, अवरोध, और जल प्रवाह में कमी के कारण उनका प्राकृतिक प्रवाह प्रभावित हुआ है। इसके लिए नदियों की सफाई, नदी संरक्षण के लिए संरचनाओं का निर्माण, पानी के पुनः उपयोग की तकनीकें को अपनाना होगा।

जल संरक्षण और वृक्षारोपण:

जल संरक्षण और वृक्षारोपण एक-दूसरे से गहरे तौर पर जुड़े हुए हैं, और इन दोनों का प्रभाव पर्यावरण पर अत्यधिक सकारात्मक होता है। विशेष रुप से तालाबों और नदियों के किनारे वृक्षारोपण की प्रक्रिया को बढ़ावा देना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह न केवल जल संरक्षण के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के लिए भी जरुरी है।

वृक्षों की अंधाधुंध कटाई के कारण जलवायु पर प्रतिकूल असर पड़ा है, जिससे नदियों और तालाबों के जलस्तर में गिरावट आई है। जब जंगलों को काटा जाता है, तो भूमि की संरचना बिगड़ जाती है, और जलवायु परिवर्तन की समस्या और बढ़ जाती है। यह नदियों के जलस्तर को प्रभावित करता है, क्योंकि पेड़ और पौधे भूमि में पानी के अवशोषण में मदद करते हैं, जिससे जल स्तर बनाए रखने में सहारा मिलता है। नदियों और तालाबों के आसपास वृक्षारोपण से जलवायु में बदलाव को नियंत्रित किया जा सकता है और जल स्तर को बनाए रखने में मदद मिल सकती है।
वृक्षारोपण का एक और महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह मृदा अपरदन को रोकता है। जब जंगल होते हैं, तो पेड़ और पौधे मृदा की ऊपरी परत को मजबूती से पकड़कर रखते हैं, जिससे पानी के प्रवाह के दौरान मृदा का कटाव नहीं होता। इसके परिणामस्वरुप, मिट्टी की उपजाऊ क्षमता बनी रहती है, और जल स्रोतों की सफाई और पुनर्भरण में मदद मिलती है। तालाबों और नदियों के पास वृक्षारोपण के कारण जल का अवशोषण बढ़ता है, जिससे जलस्रोतों में पानी की उपलब्धता सुनिश्चित रहती है, और सूखा भी कम होता है।

भूजल पुनर्भरण में वृक्षों का विशेष योगदान होता है। पेड़ पानी को भूमि में अवशोषित करने में मदद करते हैं, जिससे भूजल स्तर में वृद्धि होती है। यह न केवल नदियों और तालाबों के जल स्तर को बनाए रखने में सहायक होता है, बल्कि पूरे इलाके में जल संकट को कम करने में भी मदद करता है। जब वृक्षों के कारण जलवायु में बदलाव और सूखा कम होता है, तो न केवल जलस्रोतों का संरक्षण होता है, बल्कि पर्यावरण में हरियाली भी बनी रहती है, जो स्थानीय जीवन को बेहतर बनाती है।

इसी प्रकार, जल स्रोतों की सुरक्षा के लिए स्थानीय समुदाय को वृक्षारोपण अभियानों से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। जब समुदाय खुद वृक्षारोपण की गतिविधियों में भाग लेते हैं, तो वे पौधों की देखभाल करने के लिए भी जिम्मेदार होते हैं। इससे न केवल पौधों का संरक्षण सुनिश्चित होता है, बल्कि समुदाय को यह एहसास भी होता है कि जल स्रोतों और पर्यावरण का संरक्षण उनके लिए भी महत्वपूर्ण है। वृक्षारोपण अभियानों में समुदाय का योगदान बढ़ने से जलवायु परिवर्तन से निपटने में भी मदद मिलती है, और यह एक सामूहिक प्रयास बन जाता है, जो लंबे समय तक प्रभावी रहता है।

अंततः, जल संरक्षण और वृक्षारोपण का संयोजन प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने का एक स्थायी तरीका है। नदियों और तालाबों के किनारे वृक्षारोपण से न केवल जल स्रोतों का संरक्षण होगा, बल्कि पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को भी लाभ मिलेगा। इस दिशा में स्थानीय समुदायों की भागीदारी से यह प्रक्रिया और अधिक प्रभावी हो सकती है, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए एक जल और पर्यावरणीय रुप से समृद्ध भविष्य सुनिश्चित किया जा सकेगा।

जल जीवन मिशन का प्रभाव और सुधार:

यात्रा के दौरान जल सहेलियों ने देखा कि कुछ गांवों की बस्तियों में जल जीवन मिशन की पूरी सफलता नहीं दिखी। कई गांवों में नल से पानी की आपूर्ति अभी भी शुरु नहीं हो पाई है, जिससे ग्रामीणों को पीने के पानी के लिए अभी भी दूर-दराज के स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ रहा है। यह स्थिति विशेष रुप से दूर-दराज के इलाकों और पहाड़ी क्षेत्रों में देखने को मिल रही है, जहां जलस्रोतों की उपलब्धता कम है और जल आपूर्ति की सुविधा पहुंचाने में तकनीकी और भौगोलिक चुनौतियाँ हैं।

इसके अलावा, कुछ गांवों में पानी की गुणवत्ता भी एक समस्या बनी हुई है। जब जल जीवन मिशन के तहत पानी की आपूर्ति शुरु की गई, तो यह सुनिश्चित नहीं किया गया कि पानी की गुणवत्ता मानकों के अनुरुप हो। कुछ गांवों में लोग शिकायत कर रहे हैं कि पानी में गंदगी या अन्य अशुद्धियाँ हैं, जिससे उनका स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है। इसके कारण मिशन की पूरी सफलता पर सवाल खड़ा हो रहा है, क्योंकि जल जीवन मिशन का उद्देश्य सिर्फ पानी की आपूर्ति करना नहीं, बल्कि गुणवत्तापूर्ण पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करना भी है।

इसलिए, इन गांवों में जल जीवन मिशन की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए कुछ सुधार की आवश्यकता है। सरकार को इन गांवों में जल आपूर्ति के बुनियादी ढांचे को जल्द से जल्द पूरा करना होगा, ताकि कोई भी गांव पानी की आपूर्ति से वंचित न रहे। इसके साथ ही, पानी की गुणवत्ता की निगरानी और सुधार के लिए प्रभावी उपायों की आवश्यकता है, जैसे कि पानी के स्रोतों की नियमित जांच और जल उपचार संयंत्रों की स्थापना।

इसके अलावा, स्थानीय समुदायों को भी इस मिशन में शामिल करना जरुरी है। उन्हें पानी के सही उपयोग, बचत, और स्वच्छता के प्रति जागरुक करना होगा, ताकि वे अपने आसपास के जल स्रोतों की रक्षा कर सकें और पानी की कमी से बचने के उपायों को अपनाएं। जल जीवन मिशन को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए स्थानीय प्रशासन को भी सक्रिय रुप से काम करना होगा, ताकि जल आपूर्ति प्रणाली को सही तरीके से बनाए रखा जा सके। इस संदर्भ में, जल जीवन मिशन के तहत और सुधार की आवश्यकता है, ताकि वह पूरी तरह से हर ग्रामीण परिवार तक जल पहुंचा सके और पानी की गुणवत्ता में कोई समझौता न हो। यह मिशन तभी सफल हो सकता है जब हर व्यक्ति को न केवल पानी की सुविधा मिले, बल्कि वह पानी स्वस्थ और स्वच्छ हो, जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बना सके।

जल सहेलियों को वाटरशेड प्रबंधन एवं कर संग्रहण की जिम्मेदारी

जल सहेलियां वर्षों से जल संरक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं और उनके अनुभव, समर्पण और स्थानीय समुदाय के साथ उनके घनिष्ठ संबंध उन्हें जल संरक्षण के कार्यों में सक्षम बनाते हैं। जल सहेलियों की भूमिका को बढ़ाने और उन्हें जल जीवन मिशन, वाटरशेड प्रबंधन और जल संचयन जैसी योजनाओं के तहत जिम्मेदारी सौंपने से जल संरक्षण के क्षेत्र में कई सकारात्मक बदलाव आ सकते हैं। इन महिलाओं को इस प्रकार के कार्यक्रमों में शामिल करने से जल संरक्षण के प्रयासों को न केवल सशक्त किया जा सकता है, बल्कि इसके साथ ही स्थानीय समुदाय में भी जागरुकता बढ़ सकती है।

जल सहेलियों को वाटरशेड और जल जीवन मिशन जैसे कार्यक्रमों के अंतर्गत जल संरक्षण और जल संचयन की जिम्मेदारी दी जानी चाहिए, क्योंकि ये महिलाएं पहले ही इन क्षेत्रों में अपने अनुभवों के आधार पर बहुत कुछ कर चुकी हैं। वे पहले से ही स्थानीय जल स्रोतों का संरक्षण करने, वर्षा के पानी का संग्रह करने, और जल संकट को कम करने के उपायों पर काम कर रही हैं। जल सहेलियों का काम केवल पानी बचाना ही नहीं, बल्कि स्थानीय समुदाय को जल के सही उपयोग के प्रति भी जागरुक करना होता है।

इन महिलाओं को जिम्मेदारी सौंपने से जल संरक्षण के कार्यों में एक समर्पित और ईमानदार कैडर तैयार हो सकता है। वे स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण कार्यक्रमों का संचालन कर सकती हैं और यह सुनिश्चित कर सकती हैं कि जल की आपूर्ति और संरक्षण के लिए उठाए गए कदम सही तरीके से और पारदर्शिता से लागू हो। जल सहेलियों का पारदर्शिता और ईमानदारी में विश्वास होता है, जो उन्हें इस कार्य में और भी सक्षम बनाता है। इसके अलावा, वे जल स्रोतों के प्रबंधन के लिए स्थानीय समुदायों को जोड़े रखने में मदद कर सकती हैं, जिससे जल का सही उपयोग और संरक्षण संभव हो सके।

जल सहेलियां स्थानीय स्तर पर राजस्व संग्रहण के कार्यों को भी प्रभावी तरीके से कर सकती हैं। जल जीवन मिशन और अन्य जल संरक्षण योजनाओं के तहत जल उपयोग शुल्क या जल संचयन से संबंधित अन्य शुल्कों को एकत्रित करना इन महिलाओं के लिए कोई नई बात नहीं है, क्योंकि वे पहले से ही इन कार्यों से जुड़ी रही हैं। वे पारदर्शी तरीके से इन शुल्कों का संग्रहण कर सकती हैं और यह सुनिश्चित कर सकती हैं कि इन पैसों का उपयोग जल संरक्षण के लिए सही तरीके से हो। इससे एक स्थिर और वित्तीय रुप से समर्थ जल संरक्षण प्रणाली विकसित की जा सकती है, जो दीर्घकालिक रुप से काम कर सके।

इसके अलावा, जल सहेलियों को जल जीवन मिशन और अन्य जल संरक्षण योजनाओं में भूमिका देने से स्थानीय समुदायों में जल के महत्व के बारे में जागरुकता भी बढ़ेगी। ये महिलाएं अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर पानी के महत्व को और अधिक प्रभावी तरीके से लोगों तक पहुंचा सकती हैं और उन्हें जल के संरक्षण के महत्व के बारे में शिक्षित कर सकती हैं। जल सहेलियों के नेतृत्व में जल संरक्षण कार्यों को बढ़ावा देने से स्थानीय स्तर पर जल संकट को कम किया जा सकता है, साथ ही पर्यावरणीय स्थिरता को भी बढ़ावा मिलता है।

सामुदायिक पोषण वाटिका को प्रोत्साहन

गांवों में पंचायत की अनुपयोगी भूमि का उपयोग कर सामुदायिक पोषण वाटिका विकसित करने से स्थानीय स्तर पर फल और सब्जियां उगाई जा सकती हैं। इन वाटिकाओं में पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ जैसे हरी पत्तेदार सब्जियां, फल, दालें और अन्य पौधों का उत्पादन किया जा सकता है, जिससे लोगों को स्वच्छ और ताजे फल और सब्जियां मिलेंगी। इससे बच्चों और वयस्कों दोनों के पोषण स्तर में सुधार हो सकता है, क्योंकि ग्रामीण इलाकों में अक्सर पोषण की कमी होती है और लोग ताजे फल और सब्जियों की कमी से जूझते हैं।

इस तरह की सामुदायिक पोषण वाटिकाओं को विकसित करने के लिए महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जा सकता है, ताकि वे जैविक खेती, जल संचयन, और भूमि उपयोग के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकें। महिलाएं इन वाटिकाओं का संचालन करती हैं, जिससे न केवल वे अपनी और अपने परिवार की पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं, बल्कि उनके पास अतिरिक्त उत्पादन भी हो सकता है, जिसे वे बेचकर आय उत्पन्न कर सकती हैं। इससे महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करने का एक अवसर मिलेगा, क्योंकि वे अब अपने समुदाय के विकास में सक्रिय भागीदार बन सकती हैं।

सामुदायिक पोषण वाटिका से केवल पोषण सुरक्षा ही नहीं, बल्कि जल स्रोतों का संरक्षण भी हो सकता है। इस प्रकार की वाटिकाओं में जल संरक्षण के उपायों को भी अपनाया जा सकता है, जैसे वर्षा जल संचयन, सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली का उपयोग और मिट्टी की नमी बनाए रखने के उपाय। जब महिलाएं इन उपायों को अपनाती हैं, तो जल की बचत होती है और इससे जल संकट का समाधान होता है, जो कि विशेष रूप से सूखा प्रभावित क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त, सामुदायिक पोषण वाटिकाओं के जरिए खाद्य सुरक्षा के साथ-साथ पर्यावरणीय स्थिरता को भी बढ़ावा दिया जा सकता है। जब स्थानीय स्तर पर खाद्य पदार्थ उगाए जाते हैं, तो यह बाहरी आपूर्ति पर निर्भरता को कम करता है और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने के लिए ग्रामीण समुदायों को अधिक सशक्त बनाता है।

इसके अलावा, यह पहल महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक अधिकारों को भी मजबूत करती है। जब महिलाएं समुदाय में नेतृत्व करती हैं और सामुदायिक पोषण वाटिका का संचालन करती हैं, तो यह उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है और उन्हें सामूहिक निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में भाग लेने का अवसर देता है। इससे न केवल उनकी भूमिका परिवार में बल्कि समाज में भी सशक्त होती है।

समग्र रूप से, पंचायत की अनुपयोगी भूमि का उपयोग करके सामुदायिक पोषण वाटिका विकसित करने से न केवल पोषण सुरक्षा में वृद्धि होगी, बल्कि महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने, जल स्रोतों के संरक्षण में मदद करने और पर्यावरणीय स्थिरता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। यह एक स्थायी और समृद्ध भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है, जिसमें महिला सशक्तिकरण, खाद्य सुरक्षा, जल संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण सभी एक साथ जुड़े होते हैं।

कम पानी वाली फसलों को प्रोत्साहित करना:

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में गेहूं की अत्यधिक खेती की जा रही है, जिससे पानी की अत्यधिक खपत हो रही है। गेहूं एक पानी की अधिक खपत करने वाली फसल है, और इसकी खेती के लिए सिंचाई की बड़ी आवश्यकता होती है, जो जल संकट को और भी बढ़ा सकती है। इस समस्या का समाधान करते हुए, बुन्देलखण्ड क्षेत्र में बाजरा, ज्वार, रागी, मूंग, तिल, अरहर जैसी कम पानी वाली फसलों की खेती को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है। इन फसलों की खेती न केवल पानी की बचत करेगी, बल्कि कृषि में विविधता लाकर किसानों को भी आर्थिक रूप से सशक्त बनाएगी।

बाजरा, ज्वार, रागी, मूंग, तिल और अरहर जैसी फसलें पानी की कम आवश्यकता वाली होती हैं और इनकी खेती के लिए न केवल कम पानी की जरूरत होती है, बल्कि इनकी पैदावार भी विभिन्न मौसमों और पर्यावरणीय स्थितियों में बेहतर होती है। इन फसलों की खेती से किसानों को अतिरिक्त जल खपत से बचने का अवसर मिलेगा और वे अपने खेतों का बेहतर उपयोग कर सकेंगे। इन फसलों की विशेषता यह है कि ये अधिक सूखा सहनशील होती हैं और इन्हें कम सिंचाई की आवश्यकता होती है, जिससे किसानों को जल संकट से निपटने में मदद मिल सकती है।

किसानों को इन फसलों के लाभों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। उन्हें यह बताया जाना चाहिए कि बाजरा, ज्वार, रागी जैसी फसलें न केवल जल की खपत को कम करती हैं, बल्कि इनकी बाजार में भी अच्छी मांग है। इन फसलों की उपज का उपयोग मानव आहार, पशु आहार, और विभिन्न औद्योगिक उत्पादों के लिए किया जा सकता है। इसके अलावा, इन फसलों की खेती से मिट्टी की सेहत में भी सुधार होता है, क्योंकि ये फसलें मृदा को समृद्ध करने में मदद करती हैं और मृदा की गुणवत्ता को बनाए रखती हैं।

किसानों को इन फसलों की खेती के लाभों के बारे में जानकारी देने के लिए सरकारी संस्थाएं और कृषि विशेषज्ञ कार्यक्रमों और कार्यशालाओं का आयोजन कर सकते हैं। इसके साथ ही, किसानों को बाजरा, ज्वार, रागी और अन्य कम पानी वाली फसलों के लिए उपयुक्त बीज, कृषि उपकरण, और उन्नत तकनीक प्रदान करने की जरूरत है, ताकि वे इन फसलों की सफलतापूर्वक खेती कर सकें।

इसके अतिरिक्त, इन फसलों के लिए उचित बाजार उपलब्ध कराना भी महत्वपूर्ण है। किसानों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे अपनी फसलें उचित मूल्य पर बेच सकें और उनका उत्पादन लाभकारी हो। इसके लिए सरकारी या निजी संस्थाओं को बाजरा, ज्वार, रागी जैसी फसलों के लिए समर्पित बाजार नेटवर्क विकसित करने चाहिए। साथ ही, इन फसलों के लिए उपयुक्त भंडारण सुविधाएं और विपणन योजनाएं बनाई जानी चाहिए ताकि किसान इन फसलों को उच्चतम मूल्य पर बेच सकें और उनके लाभ में वृद्धि हो सके।

गंदे पानी को नदियों और तालाबों में जाने से रोकना:

तालाबों और नदियों में घरेलू और शहरी गंदे पानी के प्रवाह को रोकने के लिए ठोस रणनीति की आवश्यकता है, क्योंकि गंदा पानी इन जल स्रोतों को प्रदूषित करता है, जिससे जल गुणवत्ता खराब होती है और पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। गंदे पानी के प्रदूषण को रोकने और उसे पुनः उपयोग योग्य बनाने के लिए गांवों में छोटे सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (STPs) की स्थापना एक प्रभावी उपाय हो सकता है। यह रणनीति जल स्रोतों के संरक्षण, कृषि में पानी के पुनः उपयोग और जलवायु संकट से निपटने में मदद करेगी।
गांवों में छोटे सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित करने से गंदे पानी को फिल्टर किया जा सकता है, जिससे जल की गुणवत्ता में सुधार होगा। यह ट्रीटमेंट प्लांट घरेलू और शहरी गंदे पानी को साफ करके उसे कृषि उपयोग के लिए उपयुक्त बना सकते हैं। पानी के पुनः उपयोग से न केवल जल संकट में कमी आएगी, बल्कि किसानों को सिंचाई के लिए अतिरिक्त जल स्रोत भी मिलेंगे, जिससे उनकी फसल उत्पादन क्षमता में वृद्धि हो सकती है। इन छोटे सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट्स का डिज़ाइन इस प्रकार किया जा सकता है कि वे कम लागत में कार्यरत रहें और स्थानीय स्तर पर उनकी देखभाल और संचालन भी आसान हो।

इसके अलावा, इन सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट्स से प्रदूषित पानी को नदियों और तालाबों में प्रवाहित होने से पहले पूरी तरह से साफ किया जा सकता है। इस प्रकार से जल स्रोतों में किसी भी प्रकार की गंदगी, रसायन और अन्य हानिकारक तत्वों का प्रवाह नहीं होगा, जो पानी के प्रदूषण को कम करने और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने के लिए महत्वपूर्ण है। गंदे पानी के उपचार के बाद, इसे न केवल कृषि उपयोग में लिया जा सकता है, बल्कि इससे जल स्रोतों का भी संरक्षण होगा, क्योंकि पानी का पुनः उपयोग किया जाएगा और उसकी बर्बादी नहीं होगी।
गांवों में छोटे सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट्स की स्थापना से जलवायु परिवर्तन और जल संकट से निपटने के साथ-साथ, यह रणनीति पर्यावरणीय स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाएगी। यह सुनिश्चित करेगा कि गांवों में तालाबों और नदियों का पानी साफ और सुरक्षित रहे, जिससे वहां की पारिस्थितिकी तंत्र पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इसके अलावा, इस तरह के प्लांट्स से स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी उत्पन्न होंगे, क्योंकि इनका संचालन और रखरखाव करने के लिए प्रशिक्षित कर्मचारियों की आवश्यकता होगी।
समग्र रूप से, तालाबों और नदियों में घरेलू और शहरी गंदे पानी के प्रवाह को रोकने के लिए छोटे सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट्स की स्थापना एक अभिनव और प्रभावी समाधान हो सकता है। यह जल स्रोतों को संरक्षित करने, पानी की गुणवत्ता में सुधार करने, कृषि में पुनः उपयोग योग्य जल की आपूर्ति करने और जल संकट से निपटने के लिए महत्वपूर्ण कदम होगा।

स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली को बढ़ावा

पानी की बचत और कृषि में जल की उपयोगिता को बढ़ाने के लिए पारंपरिक सिंचाई विधियों की तुलना में स्प्रिंकलर और ड्रिप सिंचाई प्रणाली का उपयोग अधिक प्रभावी साबित हो सकता है। पारंपरिक सिंचाई प्रणाली में पानी की बर्बादी अधिक होती है, जिससे खेतों में अनावश्यक जल की खपत होती है। इसके बजाय, स्प्रिंकलर प्रणाली में पानी को खेतों में समान रूप से और प्रभावी तरीके से फैलाया जाता है, जिससे सिंचाई के दौरान पानी की खपत कम होती है और नमी लंबे समय तक बनी रहती है। इस प्रणाली को अपनाने से जल संकट की स्थिति में भी किसानों को राहत मिल सकती है। सरकार को इस तकनीक को किसानों तक पहुँचाने के लिए अनुदान, प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता प्रदान करनी चाहिए, ताकि किसान इसे अपनी फसलों में सही तरीके से लागू कर सकें और जल संरक्षण में योगदान दे सकें।

जल संरक्षण हेतु वेस्ट वियर निर्माण

जल स्रोतों के संरक्षण और भूजल स्तर के पुनर्भरण के लिए छोटे-छोटे वेस्ट वियर (स्लुइस गेट) का निर्माण एक प्रभावी तरीका हो सकता है। इन वेस्ट वियरों का उद्देश्य नदियों और तालाबों के जल को अधिक समय तक संचित रखना है, जिससे जल का रिसाव धीमी गति से होता है और भूजल स्तर रिचार्ज होता है। इस प्रक्रिया से जल का संचयन बढ़ेगा और स्थानीय सिंचाई में भी मदद मिलेगी। वेस्ट वियर न केवल पानी की उपलब्धता को बनाए रखने में मदद करेंगे, बल्कि कृषि के लिए आवश्यक पानी की आपूर्ति भी सुनिश्चित करेंगे। साथ ही, यह जल संसाधनों के दीर्घकालिक संरक्षण के लिए एक स्थायी उपाय होगा।

मृदा संरक्षण

बुंदेलखंड क्षेत्र में मृदा का अत्यधिक क्षरण एक गंभीर समस्या बन चुका है। इस समस्या को रोकने के लिए व्यापक स्तर पर मृदा संरक्षण उपायों को लागू किया जाना चाहिए। मेडबंधी, जिसमें मृदा को स्थिर और संरक्षित करने के लिए दीवारें बनाई जाती हैं, मृदा के क्षरण को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके अलावा, जैविक खेती को बढ़ावा देने से मृदा की उर्वरता बनी रहती है। जैविक खादों और हरी खादों का उपयोग मृदा को और अधिक उर्वर और स्वस्थ बनाने में मदद करता है, जिससे कृषि उत्पादन बढ़ सकता है। इन उपायों के द्वारा भूमि की गुणवत्ता को बनाए रखते हुए कृषि के लिए आवश्यक संसाधनों की बचत भी की जा सकती है।

अटल भूजल योजना में समुदाय की भागीदारी

अटल भूजल योजना के तहत जल संरक्षण की दिशा में कार्यों को और प्रभावी बनाने के लिए समुदाय की सक्रिय भागीदारी महत्वपूर्ण है। इसके लिए, जल सहेलियों को इस योजना के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका दी जा सकती है। जल सहेलियां पहले से ही जल संरक्षण की दिशा में काम कर रही हैं और उनके पास स्थानीय समुदायों के साथ काम करने का अनुभव है। जल सहेलियों को इस योजना में संगठित कर जल संसाधनों के सही प्रबंधन के लिए उन्हें प्रशिक्षित किया जा सकता है, ताकि वे जल संरक्षण उपायों को ज्यादा प्रभावी और टिकाऊ बना सकें। इसके द्वारा जलवायु परिवर्तन और जल संकट से निपटने के लिए एक मजबूत और स्थानीय स्तर पर कार्य करने वाली टीम तैयार हो सकती है।

पशुपालन और लघु वनोपज को बढ़ावा

बुंदेलखंड की आर्थिक गतिविधियों में पशुपालन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, लेकिन हाल के वर्षों में इसका स्तर घट गया है। इसे पुनर्जीवित करने के लिए देसी नस्लों को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि ये नस्लें कम पानी में ज्यादा लाभ देती हैं और बेहतर जलवायु सहनशीलता दिखाती हैं। इसके अलावा, डेयरी उद्योग को भी बढ़ावा दिया जा सकता है, जिससे क्षेत्रीय विकास और रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे। लघु वनोपज जैसे महुआ, तेंदू, बेल आदि की उगाई और उनके व्यापार के लिए एक अलग व्यवस्था बनाई जानी चाहिए, ताकि इन वन संपदाओं का संरक्षण हो सके और स्थानीय ग्रामीणों की आय में वृद्धि हो सके। इससे पर्यावरण को भी लाभ होगा, क्योंकि लघु वनोपज के संवर्धन से जैव विविधता बनाए रखी जा सकती है।

पॉन्ड यूनिवर्सिटी/पॉन्ड विद्यालय की स्थापना:

बुंदेलखंड के ऐतिहासिक तालाबों का संरक्षण और पुनर्जीवन अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए एक 'पॉन्ड यूनिवर्सिटी' या 'पॉन्ड विद्यालय' की स्थापना की जा सकती है, जहां तालाबों के निर्माण और उनके रखरखाव की पारंपरिक और वैज्ञानिक विधियों की शिक्षा दी जाए। इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य जल प्रबंधन की तकनीकों को समझाना और उन्हें लागू करने के लिए एक पेशेवर टीम तैयार करना होगा। यह संस्थान तालाबों के महत्व को समझते हुए जल संरक्षण को बढ़ावा देने का काम करेगा और नई पीढ़ी को जल प्रबंधन के लिए प्रशिक्षित करेगा, ताकि वे भविष्य में जल संकट से निपटने के लिए प्रभावी कदम उठा सकें।

जल सहेली केंद्र की स्थापना:

खजुराहो में 'जल सहेली केंद्र' की स्थापना की जानी चाहिए, जो जल सहेलियों के लिए संवाद और प्रशिक्षण का एक प्रमुख केंद्र बने। यहां जल सहेलियां अपनी गतिविधियों को बेहतर तरीके से संगठित कर सकेंगी और जल संरक्षण के लिए नई योजनाओं और रणनीतियों का विकास कर सकेंगी। इस केंद्र का उद्देश्य जल सहेलियों के नेटवर्क को मजबूत बनाना और उन्हें जल संरक्षण के कार्यों में अधिक प्रभावी बनाने का होगा। इससे जल सहेलियों की कार्यक्षमता में वृद्धि होगी, और वे जल संकट की चुनौतियों का सामना करने के लिए और भी बेहतर तरीके से तैयार हो सकेंगी।

समाज के विभिन्न वर्गों का सहयोग

जल सहेलियों की जल यात्रा के दौरान समाज के विभिन्न वर्गों से भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ, जिसने इस यात्रा को और भी प्रभावी बना दिया। यात्रा के दौरान स्थानीय सरकारी अधिकारियों से लेकर पंचायतों के सरपंचों तक, हर स्तर पर इस अभियान को लेकर उत्साह और समर्थन देखा गया। पंचायतों में सरपंचों और स्थानीय लोगों ने इस यात्रा को पूरी तरह से अपना लिया था, जिससे यह अभियान सफलता की ओर बढ़ा और जल संरक्षण के मुद्दे पर जन जागरुकता में इज़ाफा हुआ।

यात्रा के दौरान बच्चों का विशेष योगदान और उत्साह देखने को मिला। बच्चों के मन में जलवायु परिवर्तन को लेकर कई सवाल उत्पन्न हो रहे थे। यही वजह थी कि जल साक्षरता में उनकी रुचि दिन-ब-दिन बढ़ी। यात्रा के दौरान अब तक हजारों बच्चों के साथ संवाद हुआ था, जिनमें जलवायु परिवर्तन, उसके प्रभाव और उसके समाधान पर विस्तार से चर्चा की गई थी। बच्चों को जलवायु परिवर्तन के कारणों, प्रभावों और उससे निपटने के उपायों के बारे में सिखाया गया, जिससे वे जल संरक्षण के प्रति जागरुक हो रहे थे।

ग्राम पठा में आयोजित बाल सभा के दौरान बच्चों ने बड़े उत्साह और संजीदगी से जल चौपाल में हिस्सा लिया था। उन्होंने पानी के महत्व और उसके उपयोग को समझा और यह भी सीखा कि वे जल संकट को कैसे दूर कर सकते हैं। यह बाल सभा बच्चों के लिए बहुत उपयोगी साबित हुई, क्योंकि उन्होंने जल संकट के मुद्दों पर गहरी समझ हासिल की और जलवायु परिवर्तन से संबंधित अपनी चिंताओं को साझा करने का अवसर प्राप्त किया।

यात्रा के दौरान हर रोज़ कम से कम दो स्कूलों में बाल सभा का आयोजन किया गया था। इन बाल सभाओं में बच्चों से राय ली गई और जलवायु परिवर्तन के बारे में संवेदनशीलता बढ़ाई गई थी। इससे बच्चों के बीच जलवायु परिवर्तन के बारे में जागरुकता फैल रही थी, और वे इसे लेकर अधिक जिम्मेदार हो रहे थे।

इस यात्रा का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह था कि यात्रा के दौरान किसानों, युवाओं और समाज के विभिन्न हितग्राहियों से संवाद किया गया था, जिससे जल संरक्षण के महत्व पर लोगों में जागरुकता बढ़ी थी। जल सहेलियों के इस आंदोलन से स्थानीय समुदाय को जल संकट के समाधान की दिशा में एकजुट होने का मौका मिला था।

इसके अतिरिक्त, पपौराजी जैन तीर्थ समाज का भी इस यात्रा में महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने यात्रा का स्वागत किया और यात्रा के विश्राम के लिए आश्रय प्रदान किया था। इसके साथ ही, यात्रा में शामिल जल सहेलियों के भोजन की व्यवस्था भी समाज ने की थी, जो यात्रा के सुचारु संचालन में सहायक रही। इस प्रकार, समाज के विभिन्न वर्गों का सहयोग इस यात्रा को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा था।
समाज के हर वर्ग का यह सहयोग जल सहेलियों के इस आंदोलन को मजबूत बना रहा था और यह साबित कर रहा था कि जल संकट जैसे बड़े मुद्दे पर यदि समाज एकजुट हो जाए, तो इसे हल किया जा सकता है। जल सहेलियों की जल यात्रा ने यह सिद्ध कर दिया कि जब समाज के विभिन्न वर्ग मिलकर किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एकजुट होते हैं, तो वह लक्ष्य सफलतापूर्वक पूरा किया जा सकता है।

जलापूर्ति प्रबंधन -

जल सहेलियों की जल यात्रा के दौरान जलापूर्ति व्यवस्था में समुदाय का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। यात्रा के दौरान जल यात्रियों के लिए विभिन्न स्थानों पर समुदाय के सदस्यों द्वारा स्वयं पानी और नाश्ते की व्यवस्था की गई। इस पहल ने न केवल जल यात्रियों को राहत प्रदान की, बल्कि सामुदायिक भागीदारी और सहयोग की भावना को भी प्रोत्साहित किया।

यात्रा की तैयारियों के दौरान जल सहेलियों और कार्यकर्ताओं ने यात्रा मार्ग पर जल स्रोतों की पहचान कर ली थी। कुओं और हैंडपंपों का चयन उनकी गुणवत्ता और जल उपलब्धता के आधार पर किया गया, जिससे प्रतिदिन की जल आवश्यकता को पूरा किया जा सके। समुदाय के सहयोग से इन जल स्रोतों को स्वच्छ और सुचारु बनाए रखने का भी प्रयास किया गया।

मीडिया का सहयोग

जल यात्रा के दौरान देशभर के राष्ट्रीय और स्थानीय समाचार पत्रों ने इस महत्वपूर्ण यात्रा को व्यापक रुप से कवर किया, जिससे इसके संदेश को दूर-दूर तक फैलाया जा सका। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से जल सहेलियों की यात्रा को जिस प्रकार से जनमानस तक पहुँचाया गया, उसने जल संरक्षण के मुद्दे को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में लाया।

प्रिंट मीडिया की भूमिका

राष्ट्रीय स्तर के प्रमुख समाचार पत्रों जैसे अमर उजाला, दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, हिंदुस्तान, और पत्रिका , हरिभूमि, पत्रिका और ग्लोबल बिहारी ने जल यात्रा की कवरेज की। इन समाचार पत्रों में यात्रा के दौरान जल सहेलियों द्वारा किए गए विभिन्न प्रयासों को प्रमुखता से प्रकाशित किया गया। इन रिपोर्ट्स में न केवल यात्रा के विभिन्न पड़ावों का विवरण था, बल्कि जल संकट के समाधान के लिए उठाए गए कदमों और उनके प्रभाव का भी उल्लेख था।

अमर उजाला और दैनिक जागरण जैसे समाचार पत्रों ने विशेष रुप से यात्रा के दौरान जल सहेलियों के संघर्षों और उनके द्वारा जल स्रोतों के पुनर्जीवन के लिए किए गए कार्यों को सराहा। दैनिक भास्कर ने यात्रा के दौरान हुए समुदायों के जुड़ाव और ग्रामीणों द्वारा जल संरक्षण की दिशा में उठाए गए कदमों को प्रमुखता से कवर किया।

स्थानीय समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का योगदान:

इसके अलावा,बुन्देलखण्ड के स्थानीय समाचार पत्रों जैसे समय जगत,दर्शन पोस्ट, आज सहित 50 से अधिक स्थानीय समाचार पत्रों ने भी जल सहेलियों के जल यात्रा के संदेश को अपने पाठकों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन समाचार पत्रों ने यात्रा के प्रत्येक चरण का विस्तृत वर्णन किया और यह बताया कि कैसे जल सहेलियां अपनी मेहनत और समर्पण से जल संकट से निपटने के लिए एक नई राह प्रशस्त कर रही हैं।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का सहयोग:

टीवी चैनल्स और रेडियो के माध्यम से भी यात्रा की कवरेज की गई। इसके जरिए जल यात्रा के बारे में अधिक से अधिक लोगों तक जानकारी पहुंचाई गई। जल सहेलियों द्वारा किये गए प्रयासों और उनके संदेश को विभिन्न चैनल्स जैसे बुन्देली बौछार, बुन्देली चुगली, दैनिक भास्कर, ने कवर किया, जिससे यात्रा को और अधिक व्यापकता मिली। इन चैनल्स ने न केवल यात्रा के प्रमुख पड़ावों की कवरेज की, बल्कि जल संकट के समाधान के लिए किए गए प्रयासों को भी विस्तार से दिखाया।

सोशल मीडिया का योगदान:

सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर भी इस यात्रा का व्यापक प्रचार किया गया। फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफार्मों पर जल सहेलियों की यात्रा के बारे में लोगों ने सक्रिय रुप से जानकारी साझा की, और यात्रा के संदेश को और अधिक प्रभावी तरीके से फैलाया। विभिन्न मीडिया हाउसों के पत्रकारों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने सोशल मीडिया के माध्यम से यात्रा के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया, जो जल संकट के समाधान में एक सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

इनके माध्यम से यात्रा के संदेश को दूर-दूर तक पहुँचाया गया और जल संकट पर हो रही चर्चा को और अधिक व्यापक बनाया गया। मीडिया ने न केवल यात्रा को कवर किया, बल्कि इसे एक सामाजिक आंदोलन के रुप में प्रस्तुत किया, जिसने जल संरक्षण के महत्व को समझाया और जल सहेलियों के प्रयासों को सराहा।

सोशल मीडिया का योगदान:

मीडिया के प्रभाव के कारण जल यात्रा को राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक कवरेज मिली, जिससे जल संकट और जल संरक्षण की दिशा में एक बड़ा जन जागरण हुआ। इस जागरुकता और प्रयासों के परिणामस्वरुप, पंचायती राज एवं श्रम मंत्रालय के केंद्रीय मंत्री श्री प्रह्लाद सिंह पटेल ने 4 फरवरी को मध्य प्रदेश के ओरछा में एक महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन करने का प्रस्ताव किया।

यह कार्यशाला विशेष रुप से चंदेली बुंदेली तालाबों और छोटी नदियों के पुनर्जीवन के लिए आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला में जल सहेलियों द्वारा किए गए प्रयासों को ध्यान में रखते हुए, मनरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम) के तहत तालाबों और छोटी नदियों के पुनर्जीवन के लिए एक ठोस एक्शन प्लान (कार्य योजना) तैयार किया गया।

कार्यशाला का उद्देश्य यह था कि किस तरह से मनरेगा जैसी योजनाओं का इस्तेमाल करते हुए, छोटे जल स्रोतों जैसे तालाबों और नदियों को पुनर्जीवित किया जा सके। इसमें यह सुनिश्चित किया गया कि स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी और पारंपरिक जल प्रबंधन विधियों को पुनः लागू करते हुए, जल संरक्षण के प्रयासों को तेज किया जाए। इस कार्यशाला के दौरान, चंदेली तालाबों और बुंदेली क्षेत्र की छोटी नदियों के पुनर्जीवन के लिए कुछ प्रमुख उपायों पर चर्चा की गई। इनमें प्रमुख रुप से तालाबों की सफाई, जलस्रोतों के पुनर्निर्माण, और स्थानीय जल निकायों का संरक्षण शामिल थे।

तालाबों के पुनर्जीवित करने के लिए कार्ययोजना

यात्रा के दौरान जल सहेलियों ने देखा कि बुंदेलखंड के तालाब और नदियां रखरखाव के बिना अतिक्रमण और प्रदूषण का शिकार हो रहे हैं। तालाबों में गंदे पानी का प्रवाह बढ़ गया है, जिससे उनकी स्थिति खराब हो रही है। चंदेला-बुंदेला तालाबों में सिल्ट का जमाव होने के कारण यह समाज के लिए अनुपयोगी होते जा रहे हैं। मछुआरा समुदाय के लोगों ने बताया कि तालाबों में मछली पालन और सिंगारा उत्पादन उनकी आजीविका का मुख्य साधन है, लेकिन अतिक्रमण के कारण तालाब से पानी निकाल दिया जाता है।

जल सहेलियों ने सुझाव दिया कि तालाबों को पुनर्जीवित करने के लिए एक व्यवस्थित योजना बनाई जाए। साथ ही, तालाबों के किनारे वृक्षारोपण किया जाए और गंदे पानी को रोकने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं। यात्रा के दौरान इन तालाबों के किनारे के समुदाय के साथ संवाद किया गया, और जिसमें निम्न तालाबों को पुनर्जीवित करने के लिए चिन्हित किया गया:

- निवाड़ी जिले के लाडपुरा ग्राम पंचायत में चंदेलकालीन तालाब स्थित है, जो 70 एकड़ में फैला हुआ है, जिससे लगभग 50 एकड़ में सिंचाई होती है। इसका संरक्षण ना होने के कारण सीपेज की स्थिति है, जिससे गर्मियों में पानी बह जाता है। इसको पुनर्जीवित करने के लिए तालाब के गहरीकरण एवं सीपेज की मरम्मत करने की आवश्यकता है।
- जिला निवाड़ी में ग्राम पठारी में चंदेली कालीन तालाब 100 एकड़ में स्थित है। तालाब में सीपेज होने के कारण पानी का ठहराव केवल 4 से 5 महीने ही होता है। इस तालाब पर आसपास के किसानों की सिंचाई भी निर्भर होती है। इस तालाब के पुनर्जीवन के लिए तालाब के सीपेज को रोकने हेतु पिंचिंग कराए जाने की आवश्यकता है।
- निवाड़ी जिले की रजपुरा ग्राम पंचायत में अमृत सरोवर तालाब स्थित है, जिसमें जलभराव की स्थिति ना होने के कारण तालाब में बहुत अधिक पानी नहीं रह पाता है। अगर इस तालाब का गहरीकरण कर दिया जाए, तो और पानी को रोका जा सकता है।
- निवाड़ी जिले के चकरपुर ग्राम पंचायत में चंदेलकालीन तालाब स्थित है, जो लगभग 10 एकड़ में फैला हुआ है। बहुत अधिक पुराना तालाब होने के कारण इस तालाब में गाद बहुत जमा हो गई है। इस तालाब को सही करने के लिए सिल्ट सफाई की आवश्यकता है।
- निवाड़ी जिले के लडवारी ग्राम पंचायत में 50 एकड़ का चंदेलकालीन तालाब स्थित है। इस तालाब में लगातार सिल्ट जमाव होने के कारण इस तालाब में बहुत अधिक भराव नहीं हो पा रहा है, जिससे इसमें गर्मियों में कम पानी रहता है। इसको सही करने के लिए तालाब की सिल्ट सफाई किए जाने की आवश्यकता है।
- निवाड़ी जिले की ग्राम पंचायत मकारा के ग्राम नीमखेरा में चंदेलकालीन तालाब स्थित है, तालाब में सिल्ट जमाव एवं सीपेज होने के कारण तालाब में बहुत ज्यादा पानी नहीं रुक पा रहा है और 6 महीने में ही सूख जाता है। इस तालाब को सही करने के लिए सीपेज मरम्मत एवं सिल्ट सफाई के कार्य को करने की आवश्यकता है।
- निवाड़ी जिले के ग्राम पंचायत बिनवारा में चंदेलीकालीन तालाब स्थित है जो 15 एकड़ में फैला हुआ है, गर्मी में ये तालाब सूख जाता है। तालाब के गहरीकरण की आवश्यकता है।
- निवाड़ी जिले के ग्राम पंचायत जनोली में एक तालाब 50 एकड़ में फैला हुआ है, गर्मी में इसका पानी सूख जाता है, इस तलब के गहरीकरण की आवश्यकता है। इस तालाब से लगभग 25 एकड़ भूमि की सिंचाई की जाती है।
- झांसी जिले के ग्राम पंचायत मानपुर में चंदेलकालीन तालाब 70 एकड़ में फैला हुआ है, पानी की स्थिति अच्छी है, इस तालाब से सिंचाई 400 एकड़ में होती है, तालाब के घाट आदि के मरम्मत की आवश्यकता है।
- झांसी जिले के ग्राम पंचायत ठकुरपुरा में चंदेलकालीन तालाब है, जो लगभग 100 एकड़ से अधिक क्षेत्र में फैला हुआ है, यह तालाब पूरे वर्ष पानी से भरा रहता है, 200 एकड़ से अधिक भूमि की सिंचाई इस तालाब से होती है, इस तालाब में बहुत अधिक मात्रा में जलकुंभी है, जिसको निकालने की आवश्यकता है, साथ ही तालाब में सिल्ट सफाई के कार्य को भी किए जाने की आवश्यकता है।
- झांसी जिले के बबीना को बड़ा तालाब लगभग 10 एकड़ में फैला हुआ है, यह तालाब बबीना शहर के किनारे स्थित है, जिससे यह तालाब में पानी गंदा हो गया है, जिसके साफ-सफाई को करने की आवश्यकता है। इस तालाब से किसान भी अपनी सिंचाई के लिए पानी लेते हैं।
- झांसी जिले की ग्राम पंचायत सिमिरिया में पुराना तालाब स्थित है, जो गर्मियों में पूरी तरह से सूख जाता है, इस तालाब में सीपेज की प्रमुख समस्या है, साथ ही बंध के भी मरम्मत एवं सिल्ट सफाई करने की आवश्यकता है।
- जिला झांसी के बबीना में अमृत सरोवर का निर्माण किया गया है जो लगभग 3 एकड़ में स्थित है, इस अमृत सरोवर में पानी के रास्ते की सफाई करने की आवश्यकता है, जिससे तालाब में पूरा पानी आ सके, साथ ही तालाब के सीपेज के भी मरम्मत करने की आवश्यकता है।
- जिला ललितपुर के ग्राम पंचायत कडेसरा कलां में चंदेलकालीन तालाब है, जो 15 एकड़ में फैला हुआ है, तालाब पुराना होने के कारण सिल्ट जमाव काफी हो गया है, जिससे बहुत पानी का ठहराव नहीं होता है, इस तालाब के सिल्ट सफाई करने की आवश्यकता है।

- जिला ललितपुर के ग्राम पंचायत खांदी में उडुआ नाम का तालाब 35 एकड़ से अधिक क्षेत्र में फैला हुआ है, यह तालाब चंदेल काल के दौरान निर्मित किया गया था, जिससे इस तालाब में सिल्ट का जमाव हो गया है, तालाब के सिल्ट सफाई करवाने की आवश्यकता है।
- ललितपुर जिले के ग्राम पंचायत पुराकलां में 40 एकड़ में फैला हुआ तालाब है, जिसमें वर्षभर पानी रहता है, चंदेलकालीन जमाने में निर्मित होने एवं रखरखाव ना होने के कारण तालाब में सिल्ट का जमाव है, तालाब के गहरीकरण कराए जाने की आवश्यकता है।
- ललितपुर जिले के तालबेहट शहर में चंदेल कालीन तालाब स्थित है, जो लगभग 200 एकड़ में फैला हुआ है, इस तालाब में पूरे तालबेहट शहर का नाला जाकर मिलता है, जिससे इसमें प्रदूषण बढ़ रहा है, इसके लिए इसकी साफ-सफाई किए जाने की आवश्यकता है।
- ललितपुर जिले के ग्राम पंचायत चुरावनी मजरा ऐवनी में चंदेल कालीन तालाब स्थित है, यह तालाब नहर सिस्टम से जुड़ा हुआ है, जिससे इसमें पानी रहता है, लेकिन सिल्ट का जमाव होने के कारण इस तालाब में अधिक भराव नहीं हो पा रहा है, इसके लिए सिल्ट सफाई करने की आवश्यकता है।
- ललितपुर जिले के ग्राम पंचायत भुचेरा में पुराना तालाब 5 एकड़ क्षेत्र फैला हुआ है, तालाब में सीपेज होने के कारण पानी बहुत अधिक समय के लिए नहीं ठहर पाता है, इसको सही करने के लिए सीपेज की मरम्मत करने की आवश्यकता है।
- ललितपुर जिले के ग्राम पंचायत बुदावनी का चंदेलकालीन तालाब 12 एकड़ में फैला हुआ है, जिसमें लगातार सिल्ट जमाव होने के कारण पानी का स्टोरेज अधिक नहीं हो पा रहा है, इस तालाब को सही करने के लिए सिल्ट सफाई किए जाने की आवश्यकता है।
- टीकमगढ़ जिले के ग्राम गोर में 50 एकड़ में चंदेल कालीन तालाब फैला हुआ है, जिसमें सिल्ट का जमाव होने के कारण पानी का ठहराव बहुत अधिक नहीं है, जिससे यह तालाब सूख जाता है, इस तालाब को सही करने के लिए सिल्ट सफाई किए जाने की आवश्यकता है।
- टीकमगढ़ जिले के पडवार गांव में चंदेलकालीन तालाब स्थित है, इसमें सालभर पानी रहता है, लेकिन तालाब के आस-पास गंदगी होने के कारण पूरे तालाब की साफ-सफाई कराए जाने की आवश्यकता है।
- टीकमगढ़ जिले के आलमपुरा गांव में परागढ़ का तालाब लगभग 6 एकड़ में फैला हुआ है, तालाब के आस-पास साफ-सफाई ना होने एवं गंदा पानी तालाब में जाने से तालाब प्रदूषित है, इसकी साफ-सफाई किए जाने की आवश्यकता है।
- टीकमगढ़ शहर में महेन्द्र सागर तालाब स्थित है, जो 24 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है, चारों तरफ बहुत ज्यादा गंदगी होने के कारण साफ सफाई की आवश्यकता है।
- टीकमगढ़ जिले की ग्राम पंचायत ग्वेरा में 10 एकड़ में फैला हुआ तालाब है, गर्मी में पानी पूरी तरह से सूख जाता है, इसको सिल्ट निकालने और गहरीकरण की आवश्यकता है।
- ग्राम पंचायत पठा (टीकमगढ़ जिला) में बड़ा तालाब नाम का तालाब है, जो 9 एकड़ में फैला है, गर्मी में इसका पानी पूरी तरह से सूख जाता है, इस तालाब से सिल्ट निकाल कर गहरीकरण की आवश्यकता है।
- ग्राम पंचायत केशवगढ़ (टीकमगढ़ जिला) में एक चंदेलकालीन तालाब है जो लगभग 20 एकड़ में फैला हुआ है, इस तालाब में वर्ष भर पानी रहता है, इनलेट और सफाई की आवश्यकता है।
- टीकमगढ़ जिले की ग्राम पंचायत हथेरी में खेरका नाम का तालाब है, जो लगभग 13 एकड़ में फैला हुआ है, इस तालाब में सीपेज की समस्या है, इस तालाब से 60 एकड़ भूमि सिंचित की जाती है, गहरीकरण की भी आवश्यकता है।
- टीकमगढ़ जिले के मोहनगढ़ कस्बे में मानसरोवर नाम का तालाब है जो लगभग 200 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है, तालाब कुछ क्षतिग्रस्त हो गया है, जिस कारण से पानी तालाब में कम हो जाता है।
- मोहनगढ़ तहसील के ग्राम पंचायत अचर्रा (टीकमगढ़ जिला) में एक तालाब है जो लगभग 30 एकड़ क्षेत्रफल में फैला है, जिसमें गर्मी में पानी कम हो जाता है, जिसे मरम्मत की आवश्यकता है।

- जिला छतरपुर ब्लाक बड़ा मलेहरा की ग्राम पंचायत रामतौरिया में एक चंदेल कालीन तालाब है, जो लगभग 80 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है, सिल्ट निकालने की आवश्यकता है, इस तालाब की भूमि पर अतिक्रमण है, जिसको मुक्त करवाने की आवश्यकता है।
- बड़ा मलेहरा की ग्राम पंचायत बडोरा (छतरपुर जिला) में एक तालाब चंदेल कालीन है जो 20 एकड़ क्षेत्र में है, इस तालाब की भूमि पर अतिक्रमण है, जिसको साफ सफाई और अतिक्रमण मुक्त करवाने की आवश्यकता है।
- छतरपुर जिला के ग्राम पंचायत सेवार में एक चंदेलकालीन तालाब स्थित है, जो 10 एकड़ क्षेत्र में फैला है, जिसमें सीपेज की समस्या है।
- छतरपुर जिले के ग्राम पंचायत बमनोरा में 70 एकड़ का चंदेलकालीन तालाब स्थित है, जिसके गहरीकरण की आवश्यकता है।
- छतरपुर के ग्राम पंचायत दलीपुर में 90 एकड़ का तालाब है, इस तालाब में सिल्ट जमा होने के कारण गहरीकरण की आवश्यकता है।
- ग्राम पंचायत पनया (छतरपुर जिला) में एक तालाब चंदेलकालीन निर्मित है जो 50 एकड़ में फैला है, इसके वाल निर्माण की आवश्यकता है।
- नगर पंचायत घुवारा कस्बे (छतरपुर जिला) में 100 एकड़ में चंदेलकालीन निर्मित तालाब है, जिसमें सिल्ट भर जाने के कारण इसके गहरीकरण की आवश्यकता है।
- घुवारा कस्बे में ही चंदेलकालीन जया तालाब 90 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है, इसके साफ सफाई की आवश्यकता है।
- घुवारा कस्बे में ही मखवा तालाब चंदेलकालीन निर्मित है जो 20 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है, इसको साफ सफाई की आवश्यकता है।
- घुवारा कस्बे में ही बंधा तालाब चंदेलकालीन है जो 100 एकड़ में बना हुआ है, इस पर अतिक्रमण है, जिसको मुक्त कराने और गहरीकरण कराने की आवश्यकता है।
- ग्राम पंचायत भोहरा (छतरपुर जिला) में चंदेल कालीन खेरी बांध तालाब 20 एकड़ में फैला हुआ है, जिसमें सिल्ट भरी हुई है, तालाब के गहरीकरण की आवश्यकता है।
- ग्राम पंचायत देवपुर (छतरपुर जिला) में एक चंदेल कालीन निर्मित तालाब है जो 10 एकड़ में फैला हुआ है, जिसका बांध टूटा है, उसको मरम्मत की आवश्यकता है।
- देवपुर ग्राम पंचायत में ही दूसरा तालाब है जिसका नाम है नया तालाब, जो 50 एकड़ में फैला हुआ है, जिस पर अतिक्रमण है, अतिक्रमण से मुक्त करने की और उसको गहरीकरण की आवश्यकता है।
- ग्राम पंचायत पनवारी (छतरपुर जिला) में एक तालाब है जो जंगल का निर्माता है, लगभग 100 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है, इस पर भी अतिक्रमण है, इसमें सिल्ट भर गई है, इस तालाब में गहरीकरण की आवश्यकता है।
- ग्राम पंचायत भेलदा (छतरपुर जिला) में एक तालाब है, जो चंदेल कालीन निर्मित तालाब है, इसको साफ सफाई और गहरीकरण की आवश्यकता है, गर्मियों के मौसम में इसका पानी बहुत कम हो जाता है।
- ग्राम पंचायत विश्वास (छतरपुर जिला) में सुजान सिंह बाबा का तालाब है जो चंदेल कालीन निर्मित है, जो 10 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है, जिसको साफ सफाई की आवश्यकता है क्योंकि यह चारों तरफ से गंदा हो गया है, साथ ही इसका पानी भी गंदा है।
- ग्राम पंचायत सिमरिया (छतरपुर जिला) में बड़ा तालाब नाम से एक तालाब है जो चंदेल कालीन निर्मित है, लगभग 20 एकड़ क्षेत्र में है, जिस पर अतिक्रमण है, इसको अतिक्रमण से मुक्त कराने और गहरीकरण की आवश्यकता है।
- ग्राम पंचायत सफन पट्टी (छतरपुर जिला) में बरम सागर नाम से एक बड़ा तालाब है जो चंदेलकालीन निर्मित है, जो लगभग 200 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है, इस तालाब को मरम्मत और गहरीकरण की आवश्यकता है।
- ग्राम पंचायत भगवा (छतरपुर जिला) में सिद्ध सागर नाम से एक तालाब है जो 40 एकड़ में फैला हुआ है, जिसमें साफ सफाई और गहरीकरण की आवश्यकता है।

- ग्राम पंचायत मणि खेडा (छतरपुर जिला) में नया तालाब नाम से एक तालाब है जो लगभग 150 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है, इसमें सिल्ट भर गई है, उसको निकालने और तालाब की मरम्मत की आवश्यकता है।
- ग्राम पंचायत फुटवारी (छतरपुर जिला) में 50 एकड़ में चंदेल कालीन तालाब निर्मित है, इसे पटवारी तालाब के नाम से जाना जाता है, जिसको मुक्त करने की आवश्यकता है, साथ ही इसमें सिल्ट भर गई है, इसके कारण इस तालाब को गहरीकरण की आवश्यकता है।
- ग्राम पंचायत बरेठी (छतरपुर जिला) में नरसिंह बाबा तालाब चंदेलकालीन निर्मित है, जो 10 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है, जिसे गहरीकरण की आवश्यकता है।

> **चंदेल काल के तालाबों की तरह, हमें जल को संरक्षित करने के लिए अपने इतिहास को भी याद करना चाहिए। हम जब तक अपने जल धरोहर को नहीं बचाएंगे, तब तक हम अपने भविष्य को सुरक्षित नहीं कर सकते।**
>
> **– जल सहेली, रेखा**

> **इस यात्रा में समय का कोई अर्थ नहीं है। हम केवल पानी बचाने की अपनी जिम्मेदारी से प्रेरित होकर आगे बढ़ते हैं।**
>
> **– जल सहेली, रजनी**

> **हमारी यात्रा सिर्फ एक आंदोलन नहीं, एक अभियान है, जिसमें हम हर गांव, हर घर में जल की अहमियत समझाने जा रहे हैं। पानी नहीं होगा, तो हम कहां जाएंगे?**
>
> **– जल सहेली, पुष्पा**

"कभी गृहिणी, अब जल सहेली – रेखा ने दिखाया बदलाव का रास्ता!

रेखा झाँसी जनपद के सिमरावारी गाँव की जल सहेली है। रेखा अपने घर की मुखिया है, अपने परिवार की जिम्मेदारी निभाने के साथ-साथ एक छोटी सी किराने की दुकान भी चलाती है। वह दिन-रात अपने परिवार की देखभाल करती थी, लेकिन जल संकट ने उसकी दुनिया में एक नया मोड़ लिया। रेखा ने एक जल सहेली के रूप में समाज में बदलाव लाने का संकल्प लिया और जल सहेलियों की जल यात्रा पर निकली, जो न केवल उसकी जिंदगी को बदलने वाली थी, बल्कि उसके परिवार और समुदाय के लिए भी एक प्रेरणा बन गई।

जल यात्रा की शुरुआत में रेखा के पति, जो दुकान के कामकाजी थे, ने उसे इस यात्रा में भाग लेने की अनुमति देने में संकोच किया। उनका कहना था कि रेखा के बिना घर की सारी जिम्मेदारियाँ, खासकर दुकान, रुक सकती हैं। इसके साथ ही रेखा की बेटी भी इस साल हाई स्कूल के बोर्ड एग्जाम की तैयारी कर रही थी, और यह समय उसके लिए बेहद अहम था। पति का यह विरोध निश्चित रुप से रेखा के लिए एक चुनौती था, लेकिन उसकी नजर में जल संकट, उसकी बेटी के भविष्य से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था। रेखा ने पति से कहा, “हमारा सबसे बड़ा खजाना पानी है, और अगर यह संकट बढ़ता रहा, तो हमारे बच्चों के लिए आने वाला कल अंधकारमय होगा। मैं इस यात्रा के जरिए एक बदलाव लाना चाहती हूं।”

यह कहकर रेखा ने अपने पति को समझाया कि जल संकट का समाधान केवल उसे ही नहीं, बल्कि समूचे समाज को मिलकर करना होगा। आखिरकार, रेखा के पति ने उसकी इच्छा का सम्मान करते हुए उसे जल सहेलियों की जल यात्रा पर जाने की अनुमति दी। अब रेखा का दिल विश्वास और उत्साह से भर गया था, लेकिन उसके साथ ही वह अपनी बेटी की परीक्षा को लेकर थोड़ी चिंतित भी थी। फिर भी उसने अपनी बेटी से कहा, “तुम्हारी पढ़ाई और भविष्य सबसे महत्वपूर्ण हैं, और तुम इसे हासिल करोगी। इस यात्रा से हमारे गाँव और परिवार दोनों का भला होगा।”

जल यात्रा का हर दिन रेखा के लिए एक नई चुनौती लेकर आता था। वह गाँव-गाँव जाकर जल संरक्षण के महत्व को लोगों तक पहुँचाती। वह उन्हें बताती कि कैसे जल के सही प्रबंधन से न केवल पानी की बचत होती है, बल्कि कृषि और ग्रामीण जीवन भी समृद्ध हो सकता है। रेखा ने वर्षा जल संचयन, जल पुनर्चक्रण, और पानी की बर्बादी को रोकने के उपायों पर काम करते हुए गाँववासियों को जागरूक किया। उसकी बातों में सच्चाई और दिल से निकले शब्द थे, जो हर किसी को प्रभावित करते थे। जल सहेलियों के अभियान ने उसे सिर्फ एक साधारण गृहिणी से लेकर एक प्रेरणा स्रोत बना दिया।

इन 19 दिनों के दौरान, रेखा का परिवार, खासकर उसकी बेटी, उसके बिना घर की जिम्मेदारी निभाने में पूरी तरह से जुटा था। उसकी बेटी ने बोर्ड एग्जाम की तैयारी में कोई कसर नहीं छोड़ी, जबकि उसके पति ने दुकान की देखरेख की। रेखा के इस साहस और परिवार के सहयोग ने न केवल उसे आत्मविश्वास दिया, बल्कि उसने यह महसूस किया कि जब परिवार का समर्थन होता है, तो कोई भी संघर्ष आसान बन जाता है।

जातिवाद और रुढ़िवादिता को चुनौती देकर जल संरक्षण की ओर कदम बढ़ाती सहरिया समुदाय की जल सहेलियां

विकासखंड तालबेहट के ग्राम दौलता और हसारकला की सहरिया समुदाय की चार महिलाओं की कहानी एक अद्वितीय संघर्ष और साहस की गाथा है। यह महिलाएँ — द्रोपती, बेना, रामदेवी और माया — जल सहेली जल यात्रा में भाग लेने के लिए अपने घरों से बाहर निकलीं और अपनी ज़िन्दगी का एक नया अध्याय शुरु किया। यह उनका पहला कदम था जब इन्होंने घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर समाज में बदलाव के लिए अपनी भूमिका निभाने का संकल्प लिया।

सहरिया समुदाय में, जो सामाजिक और सांस्कृतिक तौर पर कई बंदिशों और पुरानी परंपराओं से बंधा हुआ था, इन महिलाओं ने पहली बार घर से बाहर निकलकर अपनी आवाज़ बुलंद की। जातिवाद और रुढ़िवादी सोच के खिलाफ इन बहनों ने अपनी यात्रा की शुरुआत की, और धीरे-धीरे वे समझने लगीं कि वे केवल अपनी पहचान से नहीं, बल्कि अपने समुदाय की सभी महिलाओं के अधिकारों के लिए भी आवाज़ उठाकर एक महत्वपूर्ण बदलाव ला सकती हैं।

20 दिन की इस यात्रा में इन बहनों का अनुभव बहुत ही प्रेरणादायक था। शुरुआत में ये महिलाएँ एक-दूसरे से अलग-थलग रहती थीं, लेकिन जैसे-जैसे यात्रा आगे बढ़ी, इन बहनों को यह अहसास हुआ कि वे एक समुदाय का हिस्सा हैं, और उनका साथ देना न केवल उन्हें आत्मविश्वास देगा, बल्कि वे अपने जैसे अन्य महिलाओं के लिए भी एक प्रेरणा स्रोत बन सकती हैं।

इन बहनों ने महसूस किया कि वे कभी किसी पत्नी, मां, बेटी, बहू या किसी अन्य पारंपरिक भूमिका में बंधी नहीं थीं। वे अपनी स्वतंत्रता और खुद की पहचान के साथ जल सहेली के रूप में जीवन जी रही थीं। उनकी यात्रा ने उन्हें एक नई पहचान दी — एक जल सहेली के रूप में, जो केवल खुद के लिए नहीं, बल्कि समाज के हर व्यक्ति के लिए पानी की महत्ता को समझाती और जल संरक्षण के लिए जागरुकता फैलाती थी।

इन महिलाओं के लिए यह यात्रा सिर्फ एक शारीरिक यात्रा नहीं थी, बल्कि यह एक मानसिक और सांस्कृतिक यात्रा थी, जिसमें उन्होंने अपनी पुरानी सोच और सामाजिक बंधनों को तोड़ा। जहां पहले वे खुद को घर की दीवारों तक सीमित महसूस करती थीं, अब उन्हें ऐसा आँगन मिला था जहाँ उन्होंने अपनी बचपन की खुशियाँ महसूस की, अपनी किशोरावस्था को जीया और सबसे महत्वपूर्ण बात, अपनी आज़ादी का अनुभव किया। जल सहेली जल यात्रा ने उन्हें वह मंच प्रदान किया, जहां वे पूरी दुनिया के सामने अपनी आवाज़ उठा सकती थीं, बिना किसी डर और दबाव के।

लाड़कुँवर अहिरवार और उनकी बहू नेहा की जल सहेली यात्रा

विकासखंड तालबेहट, जनपद ललितपुर के ग्राम वनगुंवा की लाड़कुँवर अहिरवार एक ऐसी महिला हैं, जिन्होंने जल सहेली के रूप में न केवल अपनी जिम्मेदारी निभाई, बल्कि अपनी बहू नेहा को भी इस कार्य में भागीदारी के लिए प्रेरित किया। लाड़कुँवर ने जल सहेलियों की जल यात्रा में भाग लिया और अपने साथ अपनी बहू को भी इस यात्रा में शामिल किया

लाड़कुँवर अहिरवार ने जल सहेली के रूप में समाज में बदलाव लाने की जिम्मेदारी उठाई थी और उन्होंने यह साबित किया कि एक महिला का नेतृत्व और संकल्प समाज में बड़े बदलाव ला सकता है। जब लाड़कुँवर ने जल सहेली के रूप में यात्रा में भाग लेने का फैसला किया, तो उन्होंने अपनी बहू नेहा को भी साथ लिया, ताकि परिवार की दोनों पीढ़ियाँ मिलकर जल संरक्षण के महत्व को समझे और इस दिशा में अपना योगदान दें।
लाड़कुँवर और उनकी बहू नेहा ने एक साथ यात्रा करके यह सिद्ध कर दिया कि एक परिवार के भीतर सहयोग और समझदारी से रिश्तों को मजबूती मिलती है। दोनों ने मिलकर जल संरक्षण के लिए जल सहेलियों की यात्रा में हिस्सा लिया और समाज में जल के महत्व को लेकर जागरूकता फैलाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जब यात्रा खत्म हुई, तो लाड़कुँवर और नेहा दोनों ही बेहद खुश थीं। उन्होंने न केवल जल सहेली के रूप में अपने कर्तव्यों को निभाया, बल्कि उनके रिश्ते में एक नई समझदारी और सामूहिकता की भावना भी विकसित हुई।

मीडिया कवरेज

हरिभूमि
आज मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ में प्रवेश करेगी पदयात्रा
पदयात्रा कर पुरखों की जल प्रणालियों को सिखा रहीं बुंदेलखंड की जल सहेलियां
आयोजन
जल सहेलियों ने जगह-जगह मिट्टी और पानी की गुणवत्ता जांच का किया प्रदर्शन
संगठन में शक्ति है, जब संगठन संघर्ष करता है तो सफलता निश्चित
Office of Shivraj
पानी बचाने के लिए जल सहेलियों की मदद लेगी भारत सरकार : माननीय श्री Shivraj Singh Chouhan जी
केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री ने जटाशंकर धाम में किया पौधारोपण
पानी बचाने के लिए जल सहेलियों की मदद लेगी भारत सरकार : शिवराज
छतरपुर-टीकमगढ़
सरकार के वाटरशेड कार्यक्रम से जल सहेलियों को जोड़ेंगे : शिवराज
बुंदेलखंड
जल संकट को हल करने महिलाओं की भागीदारी बेहद जरूरी
जटाशंकर धाम में जल यात्रा का केन्द्रीय कृषि मंत्री की मौजूदगी में हुआ समापन
जल सहेलियां आईं हैं जल क्रांति लाईं हैं : चौहान
छतरपुर आस-पास
जल सहेलियों की यात्रा का 2 दर्जन से अधिक संघर्षों ने किया स्वागत
जल सहेलियों की जल यात्रा ने छतरपुर जिले में किया प्रवेश
जलयात्रा : जल संरक्षण का दिया संदेश, बढ़-चढ़कर सबने लिया हिस्सा
विंध्य-शक्ति
समाचार
जल सहेलियों की जल यात्रा बुंदेलखंड का ओरछा से हुआ शुभारंभ
तरुणमित्र
जल संकट के प्रति जनजागरुकता को जल सहेलियां निकालेंगी पदयात्रा
छतरपुर भास्कर 14-02-2025
पृथ्वी पर पानी नहीं होता तो मानव सभ्यता भी न होती, नदियों का संरक्षण जरूरी : पूर्व विधायक
जल सहेलियों की यात्रा पहुँची रसोई, पानी के संरक्षण के लिये किया जागरुक
जल बचाने के लिये ओरछा से शुरू की जल यात्रा
जल सहेलियों की 300 किमी जलयात्रा शुरू
रामराजा सरकार के प्रांगण से शुरू हुई यात्रा
बुंदेलखंड आसपास
जल संरक्षण के महत्व के बारे में किया जागरुक
हिन्दुस्तान
जल सहेलियों ने पानी के संरक्षण पर दिया जोर
प्रयास से ही पुनर्जीवित हो सकती हैं नदियां

यात्रा के अनुभव

यात्रा की शुरुआत होते ही लोग इससे जुड़ने लगे। हर कोई अपने तरीके से सहयोग देना चाहता था। ऐसा ही एक उदाहरण एक डॉक्टर का था, जिसने यात्रा की खबर सुनते ही महिलाओं के पैरों में छाले न पड़ें, इसके लिए तुरंत 200 जोड़ी जूते भेज दिए। एक चिकित्सक होने के नाते उन्होंने यह दर्द समझा और तुरंत मदद की, ताकि महिलाएं बिना कष्ट के आगे बढ़ सकें।

यात्रा के दौरान एक बड़ा बदलाव देखने को मिला। जब महिलाएं गांवों से गुज़रीं, तो लोग उन्हें आम यात्री नहीं बल्कि सम्मान की नजर से देखने लगे। वे समझ गए कि ये महिलाएं पानी की समस्या को हल करने के लिए निकली हैं, जो हर घर की परेशानी है। परिवारों ने इन्हें इस महान उद्देश्य के लिए भेजा था, और इसीलिए गांवों में उनका स्वागत सम्मान के साथ किया गया। कुछ लोगों ने इसे एक तीर्थयात्रा की तरह देखा, क्योंकि यात्रा का मार्ग ओरछा से जटाशंकर तक था, जो आध्यात्मिक महत्व रखता है।

ललितपुर में एक अनोखा दृश्य देखने को मिला। हर दो किलोमीटर पर लोग यात्रा के स्वागत में खड़े थे। इनमें महिलाएं, समाजसेवी, संपन्न लोग, डॉक्टर, स्थानीय नेता और विधायक शामिल थे। सभी ने यात्रा को नमन किया।

यात्रा के साथ पुलिस सुरक्षा भी थी, ताकि महिलाएं बिना डर के आगे बढ़ सकें। समाज में अक्सर महिलाओं को दबाया जाता है, घरों में भी वे भय के माहौल में रहती हैं। लेकिन जब उन्होंने देखा कि उनकी सुरक्षा के लिए पुलिस भी साथ चल रही है, तो उनमें एक नई ऊर्जा और आत्मविश्वास आ गया। इससे उनके अभियान में और जोश भर गया।

यात्रा के दौरान लोग अपने-अपने तरीके से सहयोग कर रहे थे। हर कुछ किलोमीटर पर गांववाले भावनाओं से भरकर यात्रियों का स्वागत कर रहे थे। उनके लिए भोजन और पानी की व्यवस्था कर रहे थे। इसमें अमीर-गरीब, हर जाति के लोग एक साथ आए। यह यात्रा जातिगत भेदभाव को तोड़ते हुए सबको एक मंच पर ले आई।

राजापुर गांव में एक विशेष घटना घटी। जब वहां के सरपंच ने देखा कि यात्री बिना कुछ खाए-पिए आगे बढ़ रहे हैं, तो उनका दिल भर आया। जब यात्रा स्कूल में रुकी, तो उन्होंने तुरंत एक ई-रिक्शा भरकर फल मंगवाए और सभी यात्रियों में बांट दिए। यह दिखाता है कि लोगों में इस आंदोलन के प्रति जिम्मेदारी और सम्मान बढ़ रहा था।

बड़ामलहरा ब्लॉक में यात्रियों की मुलाकात अर्जुन घोष से हुई, जो सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारी थे। रिटायरमेंट के बाद उन्होंने एक पहाड़ी को फिर से हरा-भरा बनाने का संकल्प लिया था। लेकिन लोग उनका समर्थन नहीं कर रहे थे। जब उन्होंने देखा कि इतनी बड़ी संख्या में लोग प्रकृति के लिए पदयात्रा कर रहे हैं, तो वे भावुक हो गए। उनकी आंखों से खुशी और राहत के आंसू बहने लगे, क्योंकि उन्हें लगा कि वे अब अकेले नहीं हैं।

यात्रा में बुज़ुर्ग पुरुष भी शामिल हुए। उन्होंने अपने जीवन में कई बार पानी की भयंकर कमी देखी थी। वे ज्यादा चल नहीं सकते थे, लेकिन फिर भी उनका संकल्प अटूट था। उन्होंने कहा, *"अगर हमारी महिलाएं चल सकती हैं, तो हम भी चलेंगे।"* यह यात्रा का असली संदेश था—पुरुषों ने महिलाओं के नेतृत्व को पूरी तरह स्वीकार किया और सम्मान दिया।

जब यात्रा ललितपुर से टीकमगढ़ पहुंची, तो गाने और नारे पूरे माहौल में गूंज रहे थे। तभी एक महिला दौड़ती हुई आई और बोली, *"तुम सब प्यासे क्यों चिल्ला रहे हो? मेरे कुएं से पानी पी लो!"* यह दिखाता है कि लोग यात्रा से भावनात्मक रूप से जुड़ गए थे। यहां तक कि अनपढ़ और बुज़ुर्ग लोग भी समझ गए थे कि ये महिलाएं पानी बचाने के लिए आगे बढ़ रही हैं।

गांवों में चर्चा होने लगी— *"ये बहनें पानी बचाने के लिए निकली हैं।"* लोग अपने घरों के दरवाजों पर खड़े होकर यात्रा को देख रहे थे, इस पर चर्चा कर रहे थे और इसे समझने की कोशिश कर रहे थे। पूरा गांव इकट्ठा होकर इस यात्रा का गवाह बन रहा था।

यह यात्रा सिर्फ एक सफर नहीं थी, बल्कि एक क्रांति थी। इसने समाज की रुढ़ियों को तोड़ा, लोगों को जागरुक किया और सबको एक साझा उद्देश्य के लिए जोड़ दिया।

परमार्थ समाज सेवी संस्थान

प्रधान कार्यालय- आयकर विभाग के बगल में, चुर्खी रोड, उरई, जालौन- 285001

नेटवर्किंग कार्यालय- नजा हॉस्पिटल की दूसरी वाली गली, शिवाजी नगरस झांसी- 284001

क्षेत्रीय कार्यालय - मुखर्जी पार्क के सामने नं-1 स्कूल के पीछे, सनसिटी, छतरपुर-471001

Email- parmarthjhansi@gmail.coml
Website- www.parmarthindia.com
Phone- 0510-2321051, 05162254910